आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

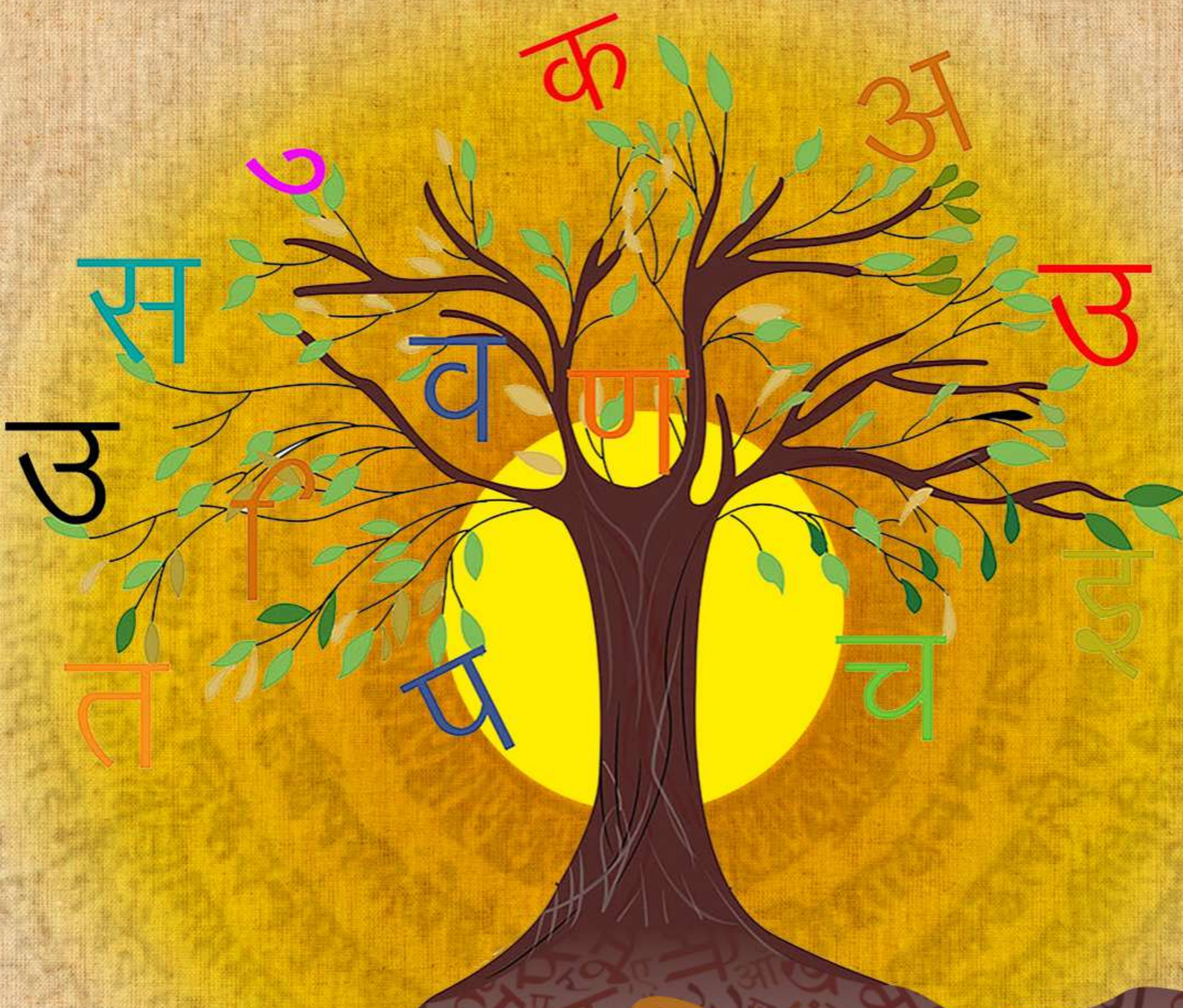

राजभाषा

रत्नसिंधु

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

हिंदी छमाही पत्रिका | अंक : 20 | जून 2023

क्षेत्रीय पुरस्कार वर्ष 2020-21 रायपुर छत्तीसगढ़ राजभाषा सम्मेलन में
मा.गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी के कर कमलों से शील्ड प्रदान किया गया।

स्वागत

श्री मिलिंद तिलगुलकर
सहायक महाप्रबंधक
बैंक ऑफ़ इंडिया

श्री मिलिंद कदरे
शाखा प्रबंधक
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

श्री हासम मसुरकर
कार्यालय प्रमुख
आकाशवाणी

श्री आनंदराव कोलेकर
शाखा प्रबंधक
इंडियन बैंक

श्री रविकिरण टेले
शाखा प्रबंधक
यूको बैंक

वाह! बच्चों

रेशु वर्मा
(एम टेक कंप्यूटर साइंस, गोल्ड मैडल)
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड
बहन, अवधेश वर्मा
वैज्ञानिक सहायक, प गु वे रत्नागिरी

सैमसन नायक
(दसवीं कक्षा ९३.४%)
पुत्र, दीपक कुमार नायक
बैंक ऑफ़ इंडिया

अध्यक्षीय संबोधन....

साथियो....

आप सभी के सामने राजभाषा रत्नसिंधु का 20 वां अंक प्रस्तुत करते समय बेहद खुशी हो रही है । समिति राजभाषा प्रचार के लिए विविध आयामों का प्रयोग कर रहीं है। उसमें से एक है पत्रिका का प्रकाशन। हमारे समिति के सदस्य कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों के प्रतिभा को उजागर करने के लिए एक मंच उपलब्ध है।

हमारी समिति राजभाषा के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है। समिति को श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय पुरस्कार से लेकर 'राजभाषा कीर्ति' तक पुरस्कार प्राप्त हुए है। अभी हम सब पर यह बहुत बडी जिम्मेवारी है कि यह स्थान कायम रखना है। मुझे विश्वास है कि हम इस चुनौती को सकारात्मकता से स्वीकार करेंगे।

सभी भारतीय भाषाएँ हमारी अपनी भाषाएँ हैं चाहे वह तमिल, तेलुगू, कन्नड, मराठी हो या अन्य भाषाएँ तभी विकसित होंगी, जब हम उन्हें खुले दिल से प्रशासनिक कामकाज में अपनाएँगे। राजभाषा हिन्दी भारत सरकार के प्रशासनिक कामकाज की भाषा है। अपना प्रशासनिक कामकाज राजभाषा हिन्दी में करना हमारी संवैधानिक आवश्यकता है।

समिति की वेबसाइट पूरी तरह अद्यतित है। समिति का अपना पुस्तकालय है। सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्य इसका लाभ ले रहें है। हमने सभी सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों के सहयोग से इस बार दो पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहें है। समिति की पहली छमाही हिन्दी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु, दूसरी ई-पत्रिका प्रेरणा है। राजभाषा रत्नसिंधु अंक-20 में हमने विविध विषयों को लिया है। विषय के इस वैविध्य का एक बड़ा कारण तो यही है कि हमारी समिति में विविध तरह के कार्यालय हैं। यहाँ बैंक और बीमा कंपनियाँ हैं, उपक्रम भी हैं और केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों के अधीनस्थ कार्यालय भी हैं। हम विविध अनुभवों से रूबरू होते हैं। समिति की वेबसाइट से भी आप यह पत्रिकाएं प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी समिति रत्नागिरी नगर में हिन्दी के प्रचार - प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती रही है। सभी सदस्य कार्यालय इसके लिए बधाई के पात्र है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के संबंध में देखें तो हमारी समिति के कई सदस्य कार्यालय निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर चुके हैं और अपने कार्यालयों में अच्छा कार्यनिष्पादन कर रहे हैं। समिति के कुछ ऐसे भी कार्यालय हैं जो राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में थोड़ा पीछे हैं। छमाही रिपोर्टों की समीक्षा से इस तथ्य का पता चलता है । मैं समिति अध्यक्ष के रूप में ऐसे कार्यालयों से अनुरोध करता हूँ कि वे राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त करें। किसी भी तरह के सहयोग के लिए समिति का अपना सचिवालय है, उसका मार्गदर्शन ले सकते हैं।

समिति आपकी है। आपके सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन से ही समिति ने शीर्ष स्थान हासिल किया है।

मैं सभी सदस्य कार्यालयों को अनुरोध करता हूं कि हमें सभी मिलकर राजभाषा प्रचार-प्रसार जारी रखेंगे।

आप सभी को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

(संतोष बा. सावंतदेसाई)

अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

संपादकीय...

साथियों,

आप सभी को सविनय नमस्कार,

हमारी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का नवीनतम अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे आनंद हो रहा है। समिति राजभाषा रत्नसिंधु पत्रिका को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है। राजभाषा रत्नसिंधु पिछले अंक में सम्मिलित आलेख, काव्य पर बहुत से पाठकों द्वारा प्रोत्साहन पर अभिप्राय प्राप्त हो गये हैं। आपके प्रतिक्रियाओं ने हमें पत्रिका में विविधता लाने के लिये उत्साहित किया गया, इसके लिए हम आपके आभारी है।

हमने पिछली बैठक में लिए गए सभी निर्णयों पर कार्रवाई की है, उनका अनुपालन सुनिश्चित किया है। समिति ने विश्व हिंदी दिवस के सुअवसर पर द्वारा गतिमंद बच्चों के स्कूल में चित्ररंगभरण प्रतियोगिता का आयोजन किया। साथ में बैंक ऑफ इंडिया ने नराकास के तत्वावधान में संगोष्ठी तथा व्याख्यान का आयोजन किया। समिति से सभी निर्णयों का अनुपालन इसलिए हो पाया कि आयोजनों के प्रति सभी कार्यालयों का दृष्किोण हमेशा की तरह सकारात्मक रहा है। यह नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का उद्देश्य ही हैं कि हिन्दी संगोष्ठी या कार्यालय प्रमुखों के लिए कार्यशाला आयोजन के चलते हम सभी कार्यालय प्रमुख वर्ष में एक या दो बार, छमाही बैठकों के अलावा भी, अवश्य मिलें। अपने कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने अथवा किसी भी तरह के राजभाषा संबंधी मुद्दों पर समस्या का सामना करने पर आप समिति के सदस्य सचिव से संपर्क करें। समस्या का त्वरित समाधान करने का प्रयास किया जाएगा। क्योंकि कार्यालयों के छोटे-छोटे प्रयास ही मिलकर एक 'समग्र प्रयास' का निर्माण करते हैं और ये समग्र प्रयास ही समिति को आगे की दिशा देते हैं । समिति की अपनी कोर कमिटी है जो विभिन्न कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों से मिलकर बनी है और सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ाने के निर्णय लेती है। मैं कोर कमिटी के सभी सदस्यों को भी हार्दिक बधाई देता हूँ। आप अपनी सक्रियता इसी तरह बनाए रखें ।

वेबसाइट पर राजभाषा संबंधी सभी तरह की अनुपालनीय जानकारी उपलब्ध है। राजभाषा रत्नसिंधु का नवीनतम अंक आपको जरूर पसंद आएगा । हमारी समिति की यह एक ऐसी पत्रिका है, जिसके जरिए हम अपने कार्यालयों की सृजनात्मकताओं और उत्कृष्टताओं से देशभर को परिचित करवा सकते हैं। इस पत्रिका में हमारे नराकास परिवार के बाल कलाकारों ने भी अपनी प्रतिभा को पत्रिका के माध्यम से अपनी कला की प्रस्तुति दी है। आलेख, कविताएं, विविध तकनीकी रचनाएं आदि विषयों को स्पर्श करने का प्रयास किया है। हिंदी -क्षेत्रीय भाषा मराठी के साथ भरा यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा। पत्रिका को और अधिक पठनीय बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

शुभ कामनाओं सहित,

धन्यवाद।

(रमेश गायकवाड)
सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा
रत्नसिंधु

अंतरंग

1.	हिंदी की उत्पत्ति और विकास...	2
2.	कुछ कहते बादल	4
3.	साइबर सुरक्षा (Cyber Security)	5
4.	डिजिटल ऋण :- जोखिम एवं विनियामक आवश्यकताएं	7
5.	महिलाओं के लिए सायबर सुरक्षा	9
6.	माँ	11
7.	इंटरनेट बना 'सच्चा साथी'	13
8.	सरफेसी अधिनियम, 2002 / SARFAESI Act, 2002	16
9.	एटीएम का सुरक्षित उपयोग कैसे करें	17
10.	जीवन में सफलता का रहस्य	18
11.	डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के योगदान	19
12.	वार्षिक कार्यक्रम वर्ष 23-24	22
13.	जीवनावश्यक कटु सत्य (मराठी लेख)	25
14.	मराठी कविताएं...	26
15.	मराठी सीखे...	27

अध्यक्ष
संतोष बा. सावंतदेसाई
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ़ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ़ इंडिया

संपादन सहयोग

श्रीमती वर्षा कांबले
सीमा शुल्क मंडल

संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे

मोहित चौधरी
बैंक ऑफ़ इंडिया

मोहम्मद नदीम
भारतीय तटरक्षक अवस्थान

हंसराम मीना
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर कार्यालय

नितिन रसाळ
सीमा शुल्क मंडल

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। अतः यह आवश्यक नहीं की इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

संपर्क कार्यालय : अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, रत्नागिरी महाराष्ट्र - 415 639.
ई-मेल - ratnasindhu10@gmail.com, वेबसाइट - http://narakasratnagiri.co.in.

हिंदी की उत्पत्ति और विकास...

भारत माँ के भाल पर सजी स्वर्णिम बिंदी,
है आपकी अपनी हिंदी।

हिंदी शब्द का सामान्य अर्थ है– हिंद का। इस अर्थ में हिंद देश में बोली जानी वाली किसी भी भाषा के लिए हिंदी शब्द का प्रयोग किया जा सकता है लेकिन भाषा शास्त्रीय दृष्टि से हिंदी भाषा से तात्पर्य है– खड़ी बोली से विकसित और नागरी लिपि में लिखी जाने वाली वह भाषा, जिसे भारत की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ है। आइए अब देखते हैं हिंदी

भाषा की उत्पत्ति एवं विकास:–

संसार का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद है और इस ग्रंथ की भाषा है संस्कृत। ऋग्वेद लिखने से पहले भी संभव है कोई अन्य भाषा विद्यमान रही हो, परंतु आज तक उसका कोई लिखित रूप नहीं प्राप्त हो पाया। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि संभवतः आर्यों की सबसे प्राचीन भाषा ऋग्वेद की ही भाषा यानी वैदिक संस्कृत ही थी। विद्वानों का यह मत है कि ऋग्वेद की भी एक काल में अथवा एक स्थान पर रचना नहीं हुई है। इसके कुछ मंत्रों की रचना कंधार में, कुछ की सिंधु तट पर और कुछ मंत्रों की गंगा–यमुना के तट पर हुई है। इस अनुमान का आधार यह है कि इन मंत्रों में कहीं कंधार के राजा दिवोदास का वर्णन है, तो कहीं सिंधु नरेश सुदास का। इन दोनों राजाओं के शासन काल के बीच शताब्दियों का अंतर है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऋग्वेद की रचना सैकड़ों वर्षों के काल में जाकर पूर्ण हुई और बाद में इसे संहित–(संग्रह)–बद्ध किया गया। ऋग्वेद के उपरांत ब्राह्मण ग्रन्थों तथा सूत्र ग्रन्थों का सृजन हुआ है और इनकी भाषा ऋग्वेद की भाषा से कई अंशों में भिन्न है, जिसे लौकिक या क्लासिकल संस्कृत कहा जा सकता है। सूत्र ग्रन्थों के रचना काल में भाषा का साहित्यिक रूप व्याकरण के नियमों में आबद्ध हो गया था। तब यह भाषा संस्कृत कहलायी गई। तब वेद तथा लोक–भाषा (लौकिक) में पर्याप्त अंतर स्पष्ट रूप में प्रकट हुआ।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का मत है कि पतंजलि (पाणिनि की व्याकरण अष्टाध्यायी के महाभाष्यकार) के समय में व्याकरण शास्त्र जानने वाले विद्वान ही केवल शुद्ध संस्कृत बोलते थे, अन्य लोग अशुद्ध संस्कृत बोलते थे तथा साधारण लोग स्वाभाविक बोली बोलते थे, जो कालान्तर में प्राकृत कहलायी गई। डॉ. चन्द्रबली पांडेय का मत है कि भाषा के इन दोनों वर्गों का श्रेष्टतम उदाहरण वाल्मीकि रामायण में मिलता है, जबकि अशोक वाटिका में पवन पुत्र हनुमान ने माता सीता से द्विजी (संस्कृत) भाषा में बात न करके मानुषी (प्राकृत) भाषा में बातचीत की। लेकिन डॉ. भोलानाथ तिवारी ने तत्कालीन भाषा को पश्चिमोत्तरी, मध्य देशी तथा पूर्वी नाम से अभिहित किया है। परंतु डॉ. रामविलास शर्मा आदि कुछ विद्वानब, प्राकृत को जनसाधारण की लोक–भाषा न मानकर उसे एक कृत्रिम साहित्यिक भाषा स्वीकार करते हैं। उनका मत है कि प्राकृत ने संस्कृत शब्दों को विकृत करने का नियमहीन प्रयत्न किया। डॉ. श्यामसुन्दर दास का मत है– वेदकालीन कथित भाषा से ही संस्कृत उत्पन्न हुई और अनार्यों के संपर्क में आकार अन्य प्रान्तीय बोलियाँ विकसित हुई। संस्कृत ने केवल चुने हुए प्रचुर प्रयुक्त, व्यवस्थित, व्यापक शब्दों से ही अपना भण्डार भरा, पर औरों ने वैदिक भाषा की प्रकृति स्वच्छान्दता को भरपेट अपनाया। यही उनके प्राकृत कहलाने का कारण है।

व्याकरण के विधि निषेध नियमों से संस्कारित भाषा शीघ्र ही सभ्य समाज की श्रेष्ठ भाषा हो गई तथा यही क्रम कई शताब्दियों तक जारी रहा। यद्यपि महात्मा बुद्ध के समय संस्कृत की गति कुछ शिथिल पड़ गई, परंतु गुप्तकाल में उसका विकास पुनः तीव्र गति से हुआ और दीर्घकाल तक संस्कृत ही राष्ट्रीय भाषा के रूप में सम्मानित रही। जनसाधारण अल्प शिक्षित वर्ग के लिए संस्कृत के नियमों का अनुसरण कठिन था, अतः वे लोकभाषा का ही प्रयोग करते थे। इसीलिए महावीर स्वामी ने जैन मत के तथा महात्मा बुद्ध ने बौद्ध मत के प्रसार के लिए लोकभाषा को ही अपनी वाणी का माध्यम बनाया। इससे लोकभाषा को ऐसी प्रतिष्ठा का पद प्राप्त हुआ, जो उससे पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुआ था।

लोकभाषा को प्रतिष्ठा प्राप्त होने पर भी संस्कृत भाषा का महत्व कभी कम नहीं हुआ। नाटककार भास, कालिदास आदि के नाटकों में सुशिक्षित व्यक्ति तो संस्कृत बोलते हैं, परंतु अशिक्षित पात्र – विदूषक तथा दास–दासियाँ आदि प्राकृत में बात करते हैं। परंतु ये सब जिन प्रश्नों के उत्तर प्राकृत में देते हुए दिखाई गए हैं, उन प्रश्नों को संस्कृत में ही पूछा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जनसाधारण भी संस्कृत को अच्छी तरह समझ लेते थे, भले ही बोलने में उन्हें कठिनाई प्रतीत होती हो। पंचतंत्र में विष्णु शर्मा ने संस्कृत भाषा में ही राजकुमारों को शिक्षा प्रदान की थी। डॉ. आर. के. मुखर्जी ने कहा है, ब्राह्मण काल एवं उसके पश्चातब भी निःसन्देह संस्कृत सामान्य जनता के धार्मिक कृत्यों पारिवारिक संस्कारों तथा शिक्षा एवं विज्ञान की भाषा थी। सरदार के. एम. पणिक्कर ने कहा है संस्कृत विश्व की संस्कृति और सभ्यता की भाषा है जो भारत की सीमाओं के पार दूर–दूर तक फैली हुई थी।

हिन्दी का निर्माण–काल: अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रांतिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी के अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। 1000 ई. के आसपास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुई। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रुप था–वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ। अपभ्रंश के संबंध में देशी शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में देशी से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। प्रश्न

यह कि देशीय शब्द किस भाषा के थे? भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को देशी कहा है जो संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव रूपोंसे भिन्न हैं। ये देशी शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावतया अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परंतु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है। प्राकृत–व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अतः जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गई। प्राचीन काल से बोलचाल की भाषा को देशी भाषा अथवा भाषा कहा जाता रहा। पाणिनि के समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। अतः पाणिनी ने इसको भाषा कहा है। पतंजलि के समय तक संस्कृत केवल शिष्ट समाज के व्यवहार की भाषा रह गई थी और प्राकृत ने बोलचाल की भाषा का स्थान ले लिया था।हिन्दी, भाषाई विविधता का एक ऐसा स्वरूप है, जिसने वर्तमान में अपनी व्यापकता में कितनी ही बोलियों और भाषाओं को सँजोया है। जिस तरह हमारी सभ्यता ने हजारों सावन और हजारों पतझड़ देखें हैं, ठीक उसी तरह हिन्दी भी उस शिशु के समान है, जिसने अपनी माता के गर्भ में ही हर तरह के मौसम देखने शुरू कर दिए थे। हिन्दी की यह माता थी संस्कृत भाषा, जिसके अति क्लिष्ट स्परूप और अरबी, फ़ारसी जैसी विदेशी और पाली, प्राकृत जैसी देशी भाषाओं के मिश्रण ने हिन्दी को अस्तित्व प्रदान किया। जिस शिशु को इतनी सारी भाषाएँ अपने प्रेम से सींचे उसके गठन की मजबूती का अंदाज लगाना बहुत मुश्किल है।

हमारी सभ्यता का हजारों साल पुराना सफ़र रहा है और इस सफर के बीच सातवीं शताब्दी (ई.पू.) से दसवीं शताब्दी (ई.पू) के दौरान संस्कृत भाषा के अपभ्रंश के रूप में उत्पन्न हिन्दी अभी अपनी माँ के गर्भ में ही थी। समय बदला, परिस्थितियाँ बदली। साथ ही बदलने लगी हमारी जरूरतें, हमारा रहन–सहन और हमारी भाषा। भाषा पर अगर गौर कर जिस दौरान पाली और प्राकृत जैसी भाषाओं का प्रभाव उनके चरम पर था। यह वही समय था जब बौद्ध धर्म पूर्णतः परिपक्व हो चुका था और पाली व पाकृत जैसी आसान भाषाओं में इसका व्यापक प्रसार हो रहा था। देखा जाए तो पुरातन हिन्दी का अपभ्रंश के रूप में जन्म 400 ई. से 550 ई. में हुआ जब वल्लभी के शासक धारसेन ने अपने अभिलेख में अपभ्रंश साहित्य का वर्णन किया। हमारे पास प्राप्त प्रमाणों में 933 ई. की श्रावकचर नामक पुस्तक ही अपभ्रंश हिन्दी का पहला उदाहरण है। परंतु हिन्दी का वास्तविक जन्मदाता तो अमीर खुसरो जी ही थे। इन्होंने 1283 में खड़ी हिन्दी को जन्म देते हुए इस शिशु का नामकरण हिंदवी किया।

यह हिन्दी का जन्म मात्र एक भाषा का जन्म न होकर भारत के मध्यकालीन इतिहास का प्रारंभ भी है, जिसमें भारतीय संस्कृति के साथ अरबी व फारसी संस्कृतियों का अद्भुत संगम नजर आता है। तुर्कों और मुगलों के प्रभाव में पल्लवित होती हिन्दी को उनकी नफासत विरासत में मिली। वहीं दूसरी ओर इस समय भक्ति और आंदोलन भी काफी क्रियाशील हो चुके थे, जिन्होंने कबीर (1398-1518 ई.), रामानंद (1450 ई.), बनारसी दास (1601 ई.), तुलसीदास (1532-1623 ई.) जैसे प्रकांड विद्वानों को जन्म दिया। इन्होंने हिन्दी को अपभ्रंश, खड़ी और आधुनिक हिन्दी के अलंकारों से सुसज्जित करके हिन्दी का श्रृंगार किया। इस काल की एक और विशेषता यह भी थी कि इस काल में हिन्दी को अपनी छोटी बहन उर्दू मिली, जो अरबी, फ़ारसी व हिन्दी के मिश्रण के रूप में अस्तित्व में आई। इस कड़ी में मुगल बादशाह शाहजहाँ (1645 ई.) के योगदानों ने उर्दू को उसका वास्तविक आकार प्रदान किया। भिन्न सभ्यताओं ने आकर हिन्दुस्तान पर शासन किया। इनकी सभ्यता और भाषाई विविधता ने ही हिन्दी का पालन–पोषण किया और एक अपभ्रंश शिशु व खड़ी बोली किशोरी को अपार अलंकारों से सुसज्जित कर आधुनिक हिन्दी रूपी युवती बनाया।

अंग्रेजी शासन तक यह अल्हड़ किशोरी शांत व गंभीर युवती के रूप में परिवर्तित हो चुकी थी। अँग्रेजियत के समावेश ने हिन्दी को तत्कालीन परिवेश में एक नया परिधान दिया। अब आधुनिक हिन्दी में तरह–तरह के प्रयोग अपने शीर्ष पर थे। किताबों, उपन्यासों, ग्रंथों, काव्यों के साथ–साथ हिन्दी राजनीतिक चेतना का माध्यम बन रही थी। 1826 ई. में उद्दंत मार्तण्ड नामक पहला हिन्दी का समाचार तत्कालीन बुद्धिजीवियों का प्रेरणा स्रोत बन चुका था। अब हिन्दी में आधुनिकता का पूर्णतः समावेश हो चुका था। अँग्रेजों के शासन ने जहाँ हिन्दी को आधुनिकता का जामा पहनाया, वहीं हिन्दी उनके विरोध और स्वतंत्र भारत के स्वप्न का भी प्रभावी माध्यम रही। तमाम हिन्दी समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं ने देश के बुद्धिजीवियों में स्वतंत्रता की लहर दौड़ाई। स्वतंत्र भारत के कर्णधारों ने जो स्वतंत्रता का स्वप्न देखा उसमें स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप हमेशा हिन्दी को ही देखा।

शायद यही वजह है कि स्वतंत्रता के उपरांत हिन्दी को 14 सितंबर,1949 को केंद्र की आधिकारिक भाषा (राजभाषा) का सम्मान मिला। वर्तमान में हिन्दी विश्व की सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली भाषाओं में दूसरा स्थान रखती है। हो सकता है कि अँग्रेजी का प्रभाव इस प्रौढ़ा हिन्दी पर अधिक नजर आता हो, मगर इस हिन्दी ने अपने भीतर इतनी भाषाओं और बोलियों को समेटकर अपनी गंभीरता का ही परिचय दिया है। हो सकता है कि भविष्य में हिन्दी भी किसी अन्य अपभ्रंश शिशु को जन्म दे सकती है, लेकिन पूरे भारत को जोड़ने वाली, सभी राज्यों में एकता रखने वाली हिन्दी राजभाषा, संपर्क भाषा के रूप में बनी रहेगी और एक दिन राष्ट्रभाषा का गौरव भी प्राप्त कर लेगी।

एकता की है यह जान, हिन्दी है देश की शान।

संतोष पाटोळे
राजभाषा सहायक, कोंकण रेलवे

कुछ कहते बादल

आसमान के विशाल नीले कैन्वस पर निरंतर बदलते बादलों को देखना बहुत ही मनमोहक प्रतीत होता है । बादल मौसम का एक महत्वपूर्ण घटक है । इंसानों की भांति बादलों को भी अलग-अलग नामों से जाना जाता है। धरती से देखने पर हमें सभी बादल एक समान ऊंचाई वाले दिखाई देते हैं। इनकी ऊंचाई का अनुमान लगाने की लिए मौसम विभाग द्वारा सीलिंग बैलून छोड़ा जाता है, अब राडार एवं कृत्रिम उपग्रहों की मदद से बादलों की ऊंचाई का अनुमान सटीक तरीके लगाया जाता है । नेफोस्कोप 19 वीं शताब्दी का एक वैज्ञानक उपकरण हैं जिसका उपयोग बादलों की ऊंचाई और गति को मापने के लिए किया जाता है, जो मौसम की भविष्यवाणी में महत्वपूर्ण है। एक बादल की ऊंचाई वायुमंडलीय स्थिरता का संकेत दे सकती है, जो आंधी के गठन की भविष्यवाणी करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। मौसम वैज्ञानिक द्वारा बादलों को उनकी आकृति और ऊंचाई के आधार पर विभिन्न नामों से जाना जाता हैं। बादलों को मुख्यतः तीन वर्गों पक्षाभ (सिरस), कपासी (कुमुलस) और स्तरी (स्टेटस) बादलों में बांटा गया है। इनका शाब्दिक अर्थ क्रमशः स्टेटस का पर्त कुमुलस का ढेर (रुई के ढेर जैसा) और सिरस का घुँघराले बाल जैसा होता है, तेज हवाओं में आसमान में पतले, रेशे जैसे पक्षाभ बादल अच्छे मौसम का संकेत दे सकते हैं, लेकिन बढ़ता आवरण इंगित करता है कि २४ घंटों के भीतर मौसम में बदलाव आ जाएगा।

स्तरित बादल अक्सर पूरे आकाश को ढकने वाली पतली धुमैले रंग की चादर की तरह दिखाई देते हैं। चूंकि वे इतने पतले होते हैं, वे शायद ही कभी ज्यादा बारिश या हिमपात पैदा करते हैं। जब ये जमीन के नजदीक पहुंच जाते हैं तो कोहरा बन जातें है। इनके द्वारा हलकी बूंदा बंदी या फुहार पड़ सकती है

कपासी बादल आमतौर पर स्वक्ष, शुष्क स्थितियों का संकेत देते हैं। इन बादलों का आधार चपटा होता है जिसके शीर्ष पर गोल रुई के ढेर जैसा या फूलगोभी के जैसा उभार दिखाई देता हैं

क्यूम्यलोनिम्बस बादल या गर्जन के बादल जो कपासी बादलों से बने होतें हैं , भारी बारिश, ओलावृष्टि, हिमपात, आंधी, बवंडर और तूफान सहित कुछ सबसे चरम मौसम की और इशारा करते हैं

सामान्यतः दिखाई देने वाले अधिकतर बादलों की ऊंचाई 1800 मीटर से 5500 मीटर तक होती है। लेकिन तड़ित झंझा और बारिश के लिए उत्तरदायी कुछ बादल धरती से 15,000 मीटर ऊंचाई तक भी पहुंच जाते हैं।

नीले प्रकाश का विकिरण करने वाले अणुओं की तुलना में बादलों का निर्माण करने वाली जल की सूक्ष्म बूंदों का आकार बहुत अधिक होने के कारण आकाश के नीले होने के बावजूद भी हमें अधिकतर बादल श्वेत रंग के दिखाई देते हैं। बादल अपने पर आरोपित सभी रंगों के प्रकाश को परावर्तित और विकिरित करने के कारण श्वेत रंग के दिखाई देते हैं।

हम अक्सर सूर्योदय या सूर्यास्त के समय लाल, नारंगी और गुलाबी रंगों के बादलों को देखते हैं। बादल स्वयं रंग-बिरंगे नहीं होते; उनके रंग भरे होने का कारण वायुमंडल में उपस्थित धूल और गैस कणों द्वारा सूर्य प्रकाश का प्रकीर्णन करना होता है। सूर्य के क्षैतिज में अस्त होते समय बादलों में रंग परिवर्तन होता देखना मनमोहक दृश्य होता है।

बादलों को देखते हुए समय आनन्दपूर्वक कट जाता है। विभिन्न प्रकार के बादलों को देखकर एवं उन्हें पहचानकर हम अगामी कुछ घंटों या दिनों में मौसम की स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं। यदि हम यह न भी कर पाएं तब भी आकाश में बादलों की हलचल हमें आनन्द प्रदान करती है।

अवधेश वर्मा
वैज्ञानिक सहायक, प.गु. वे. रत्नागिरी

साइबर सुरक्षा (Cyber Security)

परिचय : साइबर सुरक्षा, विभिन्न हमलों, नुकसान या अनपेक्षित/अनधिकृत उपयोग से नेटवर्क, सॉफ्टवेअर और डेटा की अखंडता की रक्षा करने के लिए व्यापक उपायों कों संदर्भित करता है । इसका अहम हेतू साइबर स्पेस को सुरक्षीत रखना है ।

<u>साइबर सुरक्षा की आवश्यकता</u>

1. भारत मे इंटरनेट प्रयोगकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है , जिसके कारण साइबर सुरक्षा की बहूत ज्यादा जरूरत है। आजकल सब कुछ इंटरनेट और कम्प्यूटर पर निर्भर है, जैसे की मनोरंजन, व्यापार, संचार , परिवहन, चिकित्सा, खरीदारी आदि यहाँ तक की बैंकिंग क्षेत्र भी ऑनलाइन हुआ हैं बिना सुरक्षा योजना के हैकर आपके कम्प्यूटर सिस्टम तक पहूंच सकते है और आपकी व्यक्तिगत जानकारी, आपके ग्राहक की जानकारी आदि और अन्य डाटा का दुरुपयोग कर सकते है।

2. साइबर सुरक्षा से आप सभी प्रकार की आर्थिक क्षति से बच सकते है।

3. आजकल सभी क्षेत्र में, जैसे की बैंकिंग ,खरीदारी, व्यापार , परिवहन आदि और अन्य ऑनलाइन लेन देन भी बढ़ रही है , जिसके कारण आपका कम्प्यूटर सुरक्षित होना अनिवार्य है।

4. जैसे इंटरनेट प्रयोगकर्ता बढ़ रहे है, वैसे ही सुभेद्यता मे वृद्धि हो रही है और रोज नए साइबर अपराध दर्ज हो रहे है। इस में अपेक्षाकृत अधिक जटिल एवं सवेदनशील साइबर खतरे जैसे के रैनसमवेयर भी सम्मिलित है।

5. सरकार द्वारा डिजिटलीकरण करने हेतू, आधार, MyGov, डीजीलॉकर, सरकारी ई–बाजार जैसे विविध पोर्टल तथा apps द्वारा नागरिकों , कंपनियों तथा सरकारी एजंसियों कों ऑनलाइन व्यवहारों को अपनाने हेतू प्रोत्साहित किया जा रहा है।

6. सरकार , सैन्य ,कॉर्पोरेट , वित्तीय और चिकित्सा संगठन कम्प्यूटर और अन्य उपकरणों का उपयोग करके डाटा, प्रक्रिया और अन्य जानकारी संग्रह करते है। उसमे संवेदनशील जानकारी जैसे वित्तीय डाटा, व्यक्तिगत जानकारी, intellectual property हो सकती है जिसका अनधिकृत उपयोग नकारात्मक परिणाम दे सकता है।

7. इन सबकी सुरक्षा करना हमारे समाज को कार्यशील रखने के लिए आवश्यक है जिसके कारण साइबर सुरक्षा महत्वपूर्ण है।

<u>साइबर सुरक्षा के प्रमुख तत्व</u>

1. सॉफ्टवेअर सुरक्षा : कम्प्यूटर सॉफ्टवेर एप्लिकेशन विकसित करते समय सभी चरणों मे संबन्धित प्रक्रिया एवं क्रियाओं पर ध्यान देना जरूरी है । इससे ये सुनिश्चित होता है की सॉफ्टवेर सभी खतरों और भेद्यता से सुरक्षित है।

2. इन्फॉर्मेशन सुरक्षा : गोपनीयता को बनाए रखते हुए अवैध पहुंच या इन्फॉर्मेशन चोरी से इन्फॉर्मेशन की सुरक्षा को इन्फॉर्मेशन सुरक्षा कहा जाता है।

3. नेटवर्क सुरक्षा :यह नेटवर्क की उपयोगिता, स्थिरता, सत्यता और सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है।

4. आपरेशनल सुरक्षा : इसमें डेटा assets को संभालने और उनकी सुरक्षा के लिए प्रक्रियाएं और निर्णय शामिल हैं. किसी नेटवर्क तक पहुँचने के दौरान users की अनुमति और प्रक्रियाएँ निर्धारित करती हैं कि कैसे और कहाँ डेटा संग्रहित या साझा किया जा सकता है।

5. उपयोगकर्ता प्रशिक्षण : सबसे आवश्यक और व्यवहार्य समाधान उपयोगकर्ता को प्रशिक्षित करना है। कई सुरक्षा घटनाएं केवल ज्ञान की कमी और सुरक्षा चिंताओं को महसूस किए बिना घटित होती हैं।

6. विपदा पुनःप्राप्ति (डिसास्टर रिकवरी) : व्यापार की सुरक्षा और नुकसान से बचने के लिए हर संगठन को उचित ऊठ रणनीति विकसित करनी चाहिये यह एक विकास प्रक्रिया है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के जोखिमों तक पहुँचने और विभिन्न प्राथमिकताओं को स्थापित करने और आपदा से उबरने के लिए रणनीति विकसित करने के लिए किया जाता है।

प्रौद्योगिकी पर हर दिन निर्भरता बढ़ रही है और इस निर्भरता ने इसे समझौता करने के लिए और अधिक कमजोर बना दिया हैं और इसके कारण साइबर हमले बढ़ रहे हैं। मुख्य समस्या साइबर सुरक्षा के नियमों के बारे में अनभिज्ञ होना है। इन सभी के कारण साइबर सुरक्षा आज के डिजिटल युग में एक चुनौती है ।

साइबर सुरक्षा द्वारा उपयोग किए जाने वाले सामान्य उपकरण पासवर्ड, एंटिवाइरस सॉफ्टवेअर, सॉफ्टवेअर पैच, फायरवाल।

दो तरीकों से प्रमाणीकरण (Two factor authentication)

एन्क्रिप्शन

<u>साइबर सुरक्षा का महत्व</u>

उपयोगकर्ता की परिसंपत्ति विभिन्न साइबर सुरक्षा जोखिमों से सुरक्षित और बरकरार रखना। नेटवर्क, कंप्यूटर पर हमलों, क्षति और अधिकृत पहुंच से सुरक्षा सुनिश्चित करने का महत्व एक संगठन के दैनिक नियमित संचालन के बराबर है।

आईटी में मौजूदा रुझानों को समझने और प्रभावी समाधान विकसित करने में मदद करनों सूचना और आईसीटी सिस्टम और नेटवर्क में भेद्यता को कम करना।

निजी साइबर सुरक्षा के लिए जरूरी बातें अपने सॉफ़्टवेयर और ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट करें: इसका मतलब आप नवीनतम सुरक्षा update का लाभ उठाए।

एंटी–वायरस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें: anti-virus software, virus और खतरों का पता लगाने और हटाने में मदद करता है।

मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें: सुनिश्चित करें कि आपके पासवर्ड आसानी से अनुमान लगाने योग्य नहीं हैं और हर 3 महीने में उसे बदलते रहे।

अज्ञात प्रेषकों या अपरिचित वेबसाइटों के ईमेल में लिंक पर क्लिक न करें: यह एक सामान्य तरीका है जिससे मालवेयर फैलता है।

सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षित Wi-Fi network का उपयोग करने से बचें। असुरक्षित नेटवर्क आपको बीच–बीच में होने वाले हमलों के लिए असुरक्षित बनाता है।

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र ,तेजी से आगे बढ़ रहा है। उचित सावधानियाँ रखने से हम साइबर स्पेस में सुरक्षित रह सकते है। अधिकांश उपयोगकर्ता कंप्यूटर चालू करने के बाद के खतरों से अंजान है, लेकिन उपयोगकर्ता से, कुछ बुनियादी ज्ञान और मेहनत के साथ, साइबर स्पेस में काम करना सुरक्षित हो सकता है।

सुधा पंडित
क्षेत्रीय प्रबंधक (सू.प्रौ.) कोंकण रेलवे

दीपस्तंभ

इस दीपस्तंभ के क्या रहने,
जो अविचल खड़ा है पानी में।
तूफानों से टक्कर लेकर,
अड़ा खड़ा वीरानी में।
जहाज जो आते जाते हैं,
यह सबको राह दिखाता।
खुद तिल तिल कर तो जलता है,
पर सबको मंजिल दिखलाता है।
यह अडिग और अविचल रह कर भी
मुस्कराता है,
भूले भटके राही को भी यह सही राह
दिखलाता है।
तूफानों की मार भी इसने अपने सीने
पर झेली है,
पर डरा नहीं और हटा नहीं
मुस्कान ही होंठों पर खेली है।
दीपस्तंभ के जैसे बनने की प्रकाश गाँठ
बांध लो सीने में,
गम खुद झेलो और खुशियां बाँटो
तब मजा आएगा जीने में।

ललित प्रकाश
नौचालन सहायक ग्रेड –1
(रत्नागिरी दीपस्तंभ)

डिजिटल ऋण :- जोखिम एवं विनियामक आवश्यकताएं

हाल ही में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एक वित्तीय प्राइवेट कंपनी का सार्टिफिकेट ऑफ रजिस्ट्रेशन निरस्त कर दिया गया क्यों कि वह कम्पनी मोबाइल एप्प बेस्ड डिजिटल लैंडिंग में लिप्त थी और उसके द्वारा आर बी आई के बनाये गये डिजिटल लैंडिंग के विभिन्न नियमों का उल्लंघन किया गया। वर्तमान में डिजिटल लैंडिंग सरल और सुलभ रुप से ऋण लेने का काफी प्रचलित तरीका है जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति घर बैठे बैठे भी ऋण प्राप्त कर सकता हैं, परन्तु डिजिटल लैंडिंग के बढ़ते प्रचलन और लोकप्रियता को देखते हुए ग्राहकों के साथ धोखाधड़ी जैसी समस्याएं भी बढ़ती जा रही है जो उनके वितीय क्षति का कारण बनता हैं। डिजिटल ऋण देने के लिए आज बहुत एप्स मार्केट में उपलब्ध हैं परन्तु इनकी प्रामाणिकता का पता करना सामान्य नागरिकों के लिए अत्यन्त कठिन है जो ग्राहकों को ऋण देने के झांसे में फँसा कर उनका डाटा चोरी कर अवैध रुप से उनके अन्य बैंक खातो से धन चोरी करने के लिए उसका उपयोग करते हैं । इस तरह डिजिटल ऋण में जोखिम का खतरा सदैव बना रहता हैं परन्तु जो एप्स डिजिटल ऋण उपलब्ध करवाती हैं ओर अधिकृत है उन पर भी विनियामक की आवश्यकता हैं जिससे की इन एप्स द्वारा दिये गये ऋण में पारदर्शिता आ सके क्यों कि इन एप्स से प्राप्त ऋण में पारदर्शिता का आभाव रहता हैं इनके द्वारा ग्राहकों पर लोन प्रोसेस करने के लिए काफी हिडन चार्जेज लगाए जाते हैं जिनका उल्लेख लोन प्रोसेस के समय नहीं किया जाता ये एप्स समान्य दरो से अत्यधिक ब्याज दर चार्ज करती हैं जिससे की ग्राहको द्वारा लिए गये ऋण को वह चुकाने में असमर्थ रहते है और धीरे धीरे वह इन वितीय कम्पनी के कर्ज में दब जाते है इतना हीं नहीं इनके द्वारा रिकवरी के लिए भी काफी अवैध तरीके अपनाएं जाते हैं जो ग्राहको की मानसिक स्थिति पर भी बुरा असर डालती है ।

विनियामक द्वारा ये एप्पस जिन वित्तीय संस्थाओं के साथ कार्य कर रही हैं उसकी पारदर्शिता लाना भी महत्वपूर्ण है जिस से की ग्राहक किस संस्था से ऋण ले रहा हैं और किस ब्याज दर पर ऋण ले रहा है इसकी जानकारी उसे सही से उपलब्ध हो सके और यदि इन कंपनीज के द्वारा किसी भी तरह का अनुचित व्यवहार ग्राहक के साथ किया जाता है तो इन कंपनीज के खिलाफ अनुशासनिक कार्यवाही कर स्वयं कों इनके चंगुल से मुक्त कर सके। इन्ही सब फर्जी एप्स द्वारा पारदर्शिता के आभाव और डाटा चोरी कि घटनायों कों देखते हुए हाल ही में आर बी आई द्वारा डिजिटल लैंडिंग के संदर्भ में गाइडलाइन्स जारी की गयी जो 2 सितम्बर 2023 से लागू हो गयी है। ये गाइडलाइन्स ग्राहकों कों डिजिटल लैंडिंग में होने वाली धोखाधड़ी से बचाने के लिए सहायक सिद्ध हो सकती हैं और ये गाइडलाइन्स सभी वाणिज्यिक बैंक, प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक, राज्य सहकारी बैंक, जिला केंद्रीय सहकारी बैंक; और गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनिया (आवास वित्त कंपनियों सहित) पर लागू होगी । इन गाइडलाइनसब के कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार है कि अब यदि कोई व्यक्ती डिजिटल लेंडिंग एप्स से किसी संस्था से लोन लेता हैं तो उसके लोन का जो भी डिस्बर्समेंट सीधा ग्राहक के खाते में विनियमित संस्था द्वारा किया जायेगा इसी प्रकार लोन का रिपेमेंट और सर्विस चार्जेस भी सीधा ग्राहक द्वारा विनियमित संस्था कों हीं किया जायेगा इस से डिजिटल लेंडिंग एप्स द्वारा लिए जाने वाले अतिरिक्त चार्जेस से ग्राहक को बचाया जा सकेगा और लोन का अमाउंट भी सीधे ग्राहक को सुरक्षित रुप से पहुंचा दिया जायेगा जारी की गयी गाइडलाइन्स में से एक प्रमुख गाइड्लाइन है की अब डिजिटल लेंडिंग एप्स को ग्राहक के डाटा को स्टोर करने या एक्सेस करने की अनुमति अब नहीं है और ना हीं ये एप्स ग्राहक कि अनुमति के बिना उनके द्वारा दिया गया डाटा किसी अन्य एप्प को ट्रांसफर कर सकती है जिससे की डाटा चोरी होने जैसी वारदातो पर भी अंकुश लगाने में मदद मिली हैं और विनियमित संस्था द्वारा ये भी सुनिश्चित किया जायेगा की लैंडिंग सर्विस प्रोवाइडर द्वारा चार्ज की जाने वाली किसी भी तरह की सर्विस फीस भी डायरेक्टली विनियमित संस्था द्वारा किया जायेगा वह ग्राहक से सीधे चार्ज नहीं ले सकतें। विनियमित संस्था द्वारा उन लैंडिंग एप्स कि लिस्ट भी उनकी वेबसाइट पर पब्लिश की जानी चाहिए जिनसे उनका टाई अप है। विनियमित संस्था द्वारा ये भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए की उनके द्वारा दिये जाने वाले किसी भी लोन उत्पाद कि सही एवं पूर्ण डिटेल प्रोडक्ट पेज पर प्रदर्शित की जाए। विनियमित संस्था तथा लेंडिंग सर्विस प्रोवाइडर द्वारा उपयुक्त नोडल शिकायत निवारण अधिकारी नियुक्त किया जाना चाहिए ग्राहकों की शिकायतों का निवारण कर सके और यदि विनियमित संस्था लेंडिंग सर्विस प्रोवाइडर द्वारा 30 दिन के अंदर यदि शिकायत का निवारण नहीं किया जाता है तो वह रिजर्व बैंक – एकीकृत लोकपाल योजना के

तहत शिकायत दर्ज करवा सकता है। रिजर्व बैंक द्वारा जारी की गयी गाइडलाइन्स फर्जी लैंडिंग सर्विस प्रोवाइडर से ग्राहको को बचाने में सक्षम सिद्ध हो सकती हैं और ग्राहकों के डाटा को भी प्रोटेक्ट करने में सहायक सिद्ध हो सकती है रिजर्व बैंक द्वारा आने वाले समय में डिजिटल लेंडिंग पर ओर गाइडलाइन्स आने की संभावना है।

ग्राहकों के लिए भी आवश्यक है की वह जब भी किसी डिजिटल लेंडिंग सर्विस प्रोवाइडर से ऋण ले तो उस से पहले सुनिश्चित करे की उस एप्प का टाई अप किसी विनियमित संस्था से हीं हो जिससे किसी फ्रॉड कि स्थिति में रिजर्व बैंक या विनियमित संस्था से सहायता ली जा सके। इसके अलावा ये भी सुनिश्चित किया जाये कि उस एप्प द्वारा बेसिक डाटा के अतिरिक्त कोई अन्य सूचना एकत्र नहीं की जाये। रिजर्व बैंक द्वारा जारी की गयी गाइडलाइन्स से काफी हद्द तक डिजिटल लेंडिंग फ्रॉड में कमी होने कि संभावना है तो इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकतें है की नियमन द्वारा डिजिटल लेंडिंग से सम्बन्धित जोखिम को कम किया जा सकता है और इस पर पूर्ण रुप से अंकुश लगाने के लिए विनियामक आवश्यकताएं जरूरी है।

संदर्भ:– आर बी आई / 2022-23 / 111 (डिजिटल ऋण पर दिशानिर्देश)

साहिल कुक्कड़
बैंक ऑफ़ इंडिया

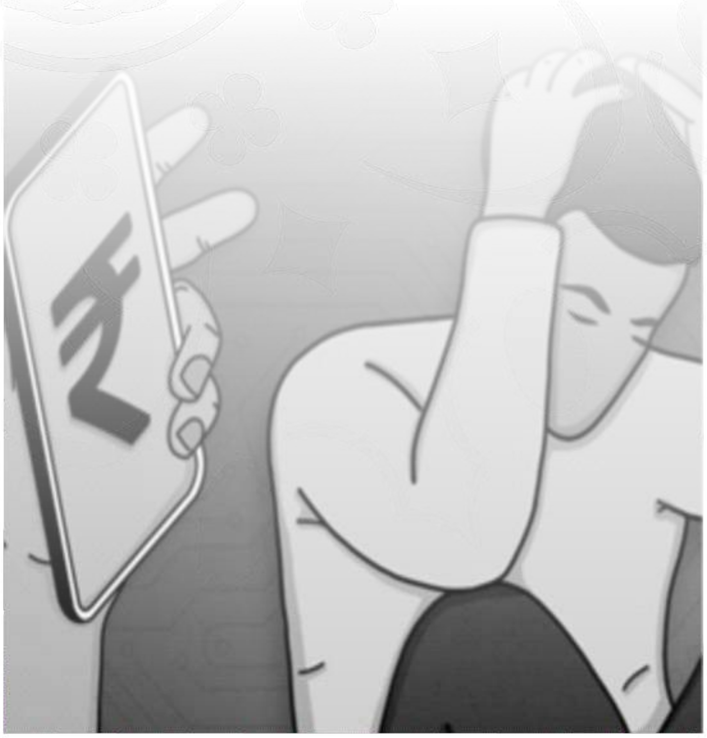

तलाश मंजिलों की - मंजिलों तक पहुंचने के बाद

इन मंजिलों तक पहुंचना इतना आसान तो नहीं था ऐ रब।
पर पहुंच कर अब लगता है.....
इतना मुश्किल भी न था शायद।।
मुश्किल होता गर दोस्त न होते शायद हर मुकाम पे,
जो हर ठोकर पर थाम लेते थे दामन मेरा।
पीठ पर थपथपी लगा कर फिर लगा देते मुझे मेरे काम पे,
न भटकने देते मुझे मेरे असली मुकाम से।
वो दोस्त कभी भाई थे, कभी जननी और कभी अर्धांगिनी थी।
चेहरे बदलते रहे वक्त से साथ,
हम साया बने अपने अपने वक्त के साथ।
कितनों का छूटा साथ और कई अब भी हैं साथ।
मंजिले मिलती गई, ख्वाइशें और बढती गई।
मृगत्रिष्णा सी मंजिले और भी बुलाती हैं, इच्छायें और भी रूझाती हैं।
अपनों का साथ आज भी है, कल शायद और भी जुडेंगे।
मगर कब तक हम यूं ही सफर करते रहेंगे।
अब तो लगता है ऐसे कि वक्त है थम जाने का।
कुछ बीती हुई यादों को संजोने का,
करें शुक्रगुजार उनका, जो अब यादों की धुंध में कहीं खो गये हैं।
कभी बसते थे दिलों में पर अब बिसरने लगे हैं।
न जाने कब तक ये उम्र साथ देगी
रहते रहते गिले शिकवे मिटा न पाये अगर
न जाने जन्नत में मौका मिले न मिले।
जीते जी शुक्रिया न कर पाये अगर,
मंजिलों की मिठास भी फीकी पड जायेगी
क्यों न मंजिलों की मंजिल सिर्फ एक हो
जहाँ अपनों का साथ वही बस आखरी मुकाम हो।

उप महानिरीक्षक शत्रुजीत सिंह,
कमान अधिकारी,
भारतीय तटरक्षक अवस्थान,

महिलाओं के लिए सायबर सुरक्षा

आजकल महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध एक जाना–पहचाना मुद्दा है। भारत में हर सेकंद, एक महिला साइबर क्राइम का शिकार बनती है और ऑनलाइन पोडियम अब एक नया मंच बन गया है , जहां हर पल एक महिला की निजता, गरिमा और सुरक्षा को चुनौती दी जा रही है। भारतीय महिलाएं साइबर अपराधों की तुरंत रिपोर्ट करने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि उन्हें वास्तव में पता नहीं है कि ऐसे अपराधों की रिपोर्ट कहां करें या वे सामाजिक शर्मिंदगी के कारण इसकी रिपोर्ट करने के लिए गंभीर नहीं हैं, जिसका वे सामना नहीं करना चाहती हैं। अधिकांश समस्याओं का समाधान किया जा सकता है यदि महिलाएं अपराध की तुरंत रिपोर्ट करें और दुर्व्यवहार करने वाले को कड़ी कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दें।

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध के प्रकार :

साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक , जो महिलाओं को बदनाम करने का लक्ष्य रखते हैं:

1. अश्लील ई–मेल, वाट्सएप मैसेज भेजना

2. वेबसाइट, चैट रूम का इस्तेमाल कर महिलाओं का पीछा करना

3. सहमति के बिना बनाया गया अश्लील वीडियो विकसित करना

4. स्पूफिंग (Spoofing) ई–मेल और फिशिंग

5.ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयरों का उपयोग करके अश्लील सामग्री के लिए छवियों का मॉर्फिंग

6. ट्रोलिंग

7. मानहानि

अश्लील ई–मेल, वाट्सऐप मैसेज भेजकर प्रताड़ना : ई–मेल के जरिए उत्पीड़न कोई नई अवधारणा नहीं है। यह पत्रों के माध्यम से परेशान करने जैसा ही है । उत्पीड़न में ब्लैकमेल करना, धमकी देना, धमकाना और यहां तक कि ईमेल के माध्यम से धोखा देना भी शामिल है। ई–उत्पीड़न पत्र उत्पीड़न के समान है लेकिन नकली आईडी से पोस्ट किए जाने पर अक्सर समस्या पैदा होती है।

वेबसाइटों, चैट रूम का उपयोग कर महिलाओं का पीछा करना – साइबर स्टाकिंग (Cyber Stalking) : साइबर स्टार्किंग की समस्या (Cyber Stalking) बढ़ रही है और महिलाएं सबसे अधिक संभावित लक्ष्य हैं। साइबरस्टॉकिंग ऑनलाइन उत्पीड़न और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के लिए किसी का पीछा करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने का एक तरीका है। एक साइबर स्टॉकर किसी पीड़ित को प्रत्यक्ष शारीरिक धमकी में शामिल नहीं होता है, लेकिन जानकारी इकट्ठा करने के लिए पीड़ित की ऑनलाइन गतिविधि का अनुसरण करता है, मौखिक धमकी के विभिन्न रूपों में धमकी देता है।साइबर स्टाकिंग का उदाहरण ईमेल खातों के समूह से छेड़छाड़, धमकी या परेशान करने वाले ईमेल भेजना है ।

सहमति के बिना बनाया गया अश्लिल वीडियो विकसित करना –साइबर पोर्नोग्राफी (Cyber Pornography) : साइबर पोर्नोग्राफी (Cyber Pornography) ज्यादातर अश्लिल सामग्री बनाने, प्रदर्शित करने, वितरित करने, आयात करने या प्रकाशित करने के लिए साइबरस्पेस का उपयोग करने का कार्य है। साइबर पोर्नोग्राफी ज्यादातर महिला नेटिज़न्स और बच्चों के लिए खतरा है।इसमें कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करके निर्मित अश्लील पत्रिकाएँ , अश्लील वेबसाइटें शामिल होती है।

स्पूफिंग ई–मेल और फिशिंग – (Spoofing & Phishing) : यह आम तौर पर एक ई–मेल को संदर्भित करता है जो एक स्रोत से निकलता है लेकिन ऐसा लगता है कि किसी दूसरे स्रोत से भेजा गया है। इससे धन (वित्तीय) क्षति हो सकती है। फ़िशिंग उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड जैसी संवेदनशील जानकारी और व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है।

मॉर्फिंग (Morphing) : मॉर्फिंग का अर्थ है अनधिकृत उपयोगकर्ता या नकली पहचान द्वारा मूल तस्वीर को संपादित करना। यह पता चला कि महिलाओं की तस्वीरों को फर्जी यूजर्स द्वारा डाउनलोड किया जाता है और एडिट करने के बाद फर्जी प्रोफाइल बनाकर अलग–अलग वेबसाइटों पर फिर से पोस्ट/अपलोड किया जाता है।

ट्रोलिंग (Troling) : ट्रोल इंटरनेट पर विवाद फैलाते हैं, अपराधी झगड़ना शुरू कर देते हैं या पीड़ितों को भावनात्मक, परेशान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए उत्तेजित करने के इरादे से एक ऑनलाइन समुदाय में भड़काऊ या विषय से हटकर संदेश पोस्ट करते हैं। ट्रोल पेशेवर दुर्व्यवहार करने वाले होते हैं, जो सोशल मीडिया पर नकली आईडी का उपयोग करके साइबर स्पेस में शीत युद्ध का माहौल बनाते हैं और उन्हें ट्रोल करना भी आसान नहीं होता है।

मानहानि (Defamation) : साइबर मानहानि में वेबसाइट पर व्यक्ति के बारे में मानहानिकारक जानकारी प्रकाशित करना या पीड़ितों या संगठन के सामाजिक और मित्र मंडली के बीच प्रसारित करना शामिल है जो एक महिला की प्रतिष्ठा को उसकी गंभीर मानसिक पीड़ा और दर्द के कारण

बर्बाद करने का एक आसान तरीका है।

सरकार द्वारा बनाया गया आईटी अधिनियम 2000 (IT ACT 2000)

1. साइबर मानहानि: धारा 67 और 72

2. मॉर्फिंग और ईमेल स्पूफिंग : सेक्शन 43 और 66

3. अश्लीलता : धारा 67(बी)

4. अन्य अपराध : धारा 65– कंप्यूटर सिस्टम को हैक करना धारा 66 – ऐसी सूचना का प्रकाशन जो विद्युत रूप में अश्लील हो धारा 67 – संरक्षित प्रणाली तक पहुंच धारा 72 – गोपनीयता और निजता का हनन धारा 354 डी– यह धारा पीछा करने से संबंधित है महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध को रोकने के लिए प्रभावी उपाय करने और इन मुद्दों के बारे में समाज में जागरूकता पैदा करने के लिए गृह मंत्रालय द्वारा महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध रोकथाम (CCWC) के लिए एक योजना तैयार की गई है।

महिलाओं को साइबर क्राइम का शिकार होने से बचाने के कुछ उपाय

1. हमेशा मजबूत पासवर्ड का इस्तेमाल करें और पासवर्ड शेयर न करें।

2. सोशल मिडीया पर हमेशा अनिवार्य से अधिक शेयर न करें।

3. अकेले ऑनलाइन दोस्तों आदि से न मिलें।

4. सोशल मिडीया पर सब कुछ प्रकाशित न करें।

5. उन लोगों को ब्लॉक कर दें जिनके साथ आप इंटरैक्ट नहीं करना चाहते हैं।

6. साइबर क्राइम की रिपोर्ट करना यह बहुत जरूरी है। हर महिला बिना किसी झिझक के ऐसे साइबर क्राइम की रिपोर्ट करे।

7. वेबसाइटों और सॉफ्टवेयर के गोपनीयता नीतियों पर ध्यान दें।

8. व्यक्तिगत जानकारी चुराने के लिए उपयोग की जाने वाली वेबसाइटों से सावधान रहें।

निलेश वाडकर

कोंकण रेलवे

कागज की कश्तिया,...

बीत गए वह .....दिन सुहाने,
बन गई ....एक कहानी ।
वह कागज की, कश्ती और ,
बारिश का ....पानी ।।

आज भी गुजरता हूं........ . जब ,
उन बीती हुई.   .... राहों से ।
एक कतरा बनकर बूंद, बारिश की,
बरस जाती है ....आंखों से ।।

वो बनाकर कागज के,... अखबार से,
रंग बिरंगी सी................. कश्तियां ।
जब चलती थी वो, बारिश के पानी में ,
मन करता था खूब ....मस्तियां ।।

वह लड़ना झगड़ना.......... बेमतलब का ,
तब दिल में मतलब कहां, हुआ करता था ।
खूब कर के ....मौज मस्ती ,
हर बालक........ बचपन जिया करता था ।

भीगने का एक अलग,आनंद हुआ करता था ,
तब घरों में कहां बच्चा... बंद हुआ करता था ।
खुली हवा में ,लेता था............. खूब सांसे ,
बीमार शायद कोई,चंद हुआ ....करता था ।।

आज सुबह से लेकर, शाम....... बरस जाती है,
बारिश की बूंदे कश्तियों के लिए. तरस जाती है ।
आज वह बचपन, वो बचपन वाली ...बात कहां ,
आज की ....नन्ही पीढ़ी ,
कश्तियों का मतलब ....कहां समझ पाती है ।।

राजेश पी जोशी

क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं

क्षेत्रिय सहायक विद्युत अभियंता /रत्नागिरी

माँ

हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को मदर्स डे यानी मातृ दिवस मनाया जाता है। करीब 111 साल से यह परंपरा चल रही है। इस दिन की शुरुआत एना जार्विस ने की थी। उन्होंने यह दिन अपनी मां को समर्पित किया और यह तारीख इस तरह चुनी कि वह उनकी मां की पुण्यतिथि 9 मई के आसपास ही पड़े। सभी के लिए प्रथम ईश्वर, शिक्षक, दार्शनिक, मार्गदर्शक और मित्र मां होती है। वो ही है जो हाथ पकड़ कर हमें चलना सिखाती है। मां ही हमें बोलना और लिखना सिखाती है। इस निरंतर बदलती दुनिया में एक मां ही है जो स्थिर है। उसकी महानता और उसके कार्यों का वर्णन करने के लिए जितना कुछ लिखा जाए और जितना कुछ कहा जाए सब कम है। मां, प्यार और देखभाल का प्रतीक है। मां के आगे देवता भी नतमस्तक हो जाते हैं। एक बच्चा भले ही अपने दिल की बात न कहे, लेकिन मां की आंखों में देखकर ही पता चल जाता है कि उसके दिल में क्या चल रहा है? यही वह प्यार है जो एक मां अपने साथ रखती है। चाहे वह कितना भी दर्द सहे, और कितने ही लोग उसकी आलोचना करें, फिर भी वह हमेशा अपने बच्चे और परिवार के लिए एक सुरक्षा के कवच के रूप में काम करती है। वह मुश्किल समय में बच्चों के लिए सबसे बड़ा सहारा होती हैं।

जन्म से मृत्यु तक माँ अपने बच्चों को पालती हैं। फिर अपने बचपन और यहां तक कि वयस्कता में भी अपना प्यार और स्नेह जारी रखती हैं। हर माँ हमेशा यह सुनिश्चित करती है कि उनके बच्चे हमेशा स्वस्थ, सुरक्षित और खुश रहें। यह अपने बच्चे के लिए प्यार है जो एक माँ महसूस करती है जो इन भावनाओं से व्यक्त नही करती है। एक मां के मन में अपने बच्चों के प्रति जो भावना होती है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। दरअसल, ज्यादातर महिलाएं तब तक नहीं समझ पाती जब तक कि वे खुद मां नहीं बन जाती। एक माँ ही है जो हमेशा अपने बच्चे के लिए सब कुछ त्याग करती है और अपने बच्चे से जुड़ी किसी भी चीज़ से कभी समझौता नहीं करती है। माता–पिता अपने बच्चे को हमेशा कठिन परिस्थिति से बचाने की कोशिश करते हैं और उन्हे वह सब सुविधा प्रदान करते हैं। माँ का प्यार केवल अपने बच्चे को दुलारने के बारे में नहीं है बल्कि अपने बच्चे को नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराने के बारे में भी है।

माँ एक सुखद अनुभूति है। वह एक शीतल आवरण है जो हमारे दुःख, तकलीफ की तपिश को ढँक देती है। उसका होना, हमारे जीवन की हर लड़ाई को लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। सच में, शब्दों से परे है माँ की परिभाषा। माँ शब्द के अर्थ को उपमाओं अथवा शब्दों की सीमा में बाँधना संभव नहीं है। इस शब्द की गहराई, विशालता को परिभाषित करना सरल नहीं है क्योंकि इस शब्द में ही संपूर्ण ब्रह्मांड, सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य समाया है। माँ व्यक्ति के जीवन में उसकी प्रथम गुरु होती है, उसे विभिन्न रूपों–स्वरूपों में पूजा जाता है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में मातृ ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति में जननी एवं जन्मभूमि दोनों को ही माँ का स्थान दिया गया है। मानव अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति जन्मभूमि यानि धरती माँ से, तो जीवनदायी आवश्यकता की पूर्ति जननी से करता है। मनुष्य माँ अनंत शक्तियों की धारणी होती है। इसीलिए उसे ईश्वरीय शक्ति का प्रतिरूप मानकर ईश्वर के सदृश्य माना गया है। माँ के समीप रहकर उसकी सेवा करके, उसके शुभवचनों, शुभाशीष से जो आनंद प्राप्त किया जा सकता है वह अवर्णनीय है। मनुष्य से लेकर पशु एवं पक्षियों तक को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी एवं कुशल बनाने के लिए उनकी माँ उन्हें स्वयं से अलग तो करती है परंतु उनकी सुरक्षा के प्रति हमेशा सचेत रहकर अपने ममत्व को बनाए रखती है। परंतु ठीक इसके विपरीत कई बार मानव स्वयं अपने बढ़ते बुद्धि विकास के कारण अपनी सुरक्षा एवं आवश्यकता के प्रति स्वार्थी होकर माँ और उसकी ममता के प्रति उदासीन हो जाता है। फिर वह अपनी पूर्ति के लिए जननी और जन्मभूमि दोनों का दोहन तो करता है परंतु उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना भूल जाता है। जो व्यक्ति अपने इन कर्तव्यों का पालन करता है वो स्नेह, ममत्व की छाँव में रहकर सद्गुण, संस्कार, नम्रता को प्राप्त करता है। वह अपने जीवन में समस्त सुखों और जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर ऊँचाइयों को पा लेता है। वहीं ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों के निर्वहन में मातृशक्ति को, उसके स्नेह, ममत्व को उपेक्षित कर उन्नति का मार्ग ढूँढने का प्रयास करते हैं, वे जीवन भर निराशा के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते।

एक अच्छी परवरिश व्यक्ति के बेहतर भविष्य का निर्माण करती है और एक माँ अपने बच्चे को बेहतर भविष्य देने के लिए एक उत्कृष्ट कार्य करती है। वह घर को घर में बदल देती है; वह एक सुपरवुमन के रूप में काम करती है क्योंकि घर के कामों को संभालते रहना और परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकता को समय पर पूरा करना कोई आसान काम नहीं है।

अगर वर्किंग महिलाओं की बात करें तो हम सोच भी नहीं सकते कि वह एक साथ कैसे सब कुछ मैनेज करती होंगी। हमे अपनी मां पर गर्व होना चाहिए जिन्होंने नौकरी, खेत व पशुओं का काम करने के साथ–साथ घर को भी ठीक से चलाने के साथ–साथ हमारा पालन–पोषण किया है।

जन्म के बाद, एक बच्चा अपनी माँ को पहले दोस्त के रूप में पाता है जो अतिरिक्त देखभाल और पोषण के साथ–साथ उसके साथ खेलती है। वह अपने बच्चे के साथ एक दोस्त की तरह बातचीत करती है और अपने बच्चे की सभी गतिविधियों को देखती रहती है।

एक माँ अपने बच्चे के साथ खेलते हुए कभी भी थकती नहीं है और हमेशा बिना सोचे समझे उसकी सभी माँगों को पूरा करती है। बिना किसी उम्मीद के एक माँ अपने बच्चे की बेहतरीन के लिए काम करती रहती है। वह एक संरक्षक, एक शिक्षक, एक दोस्त, एक कार्यवाहक की तरह माँ सहित सभी भूमिकाएँ निभाती हैं। वह इस दुनिया में किसी भी चीज से ज्यादा अपने बच्चे से प्यार करती है लेकिन कभी–कभी वह अपने बच्चे के प्रति थोड़ी सख्त हो जाती है ताकि वह जीवन में आने वाली विभिन्न परिस्थितियों से लड़ने के लिए सक्षम हो सके। माँ हमें वह शक्ति प्रदान करती हैं जिससे हम उन्हें ग्रहण कर पाते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं।

माँ ही है जो अपने बच्चे की भावनाओं या आवश्यकताओं को आसानी से समझ लेती है। वह हर पल अपने बच्चों की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसके आसपास बिताती है। बचपन से ही, हमारी माँ हमें एक अच्छा इंसान बनाने के लिए क्या गलत है और क्या सही है, यह बताती रहती है और हमें जीवन में अच्छे काम करने के लिए प्रोत्साहित एवं मार्गदर्शन भी करती है। माँ की सुगंध को उसका नवजात शिशु आसानी से पहचान जाता है। जन्म के बाद से, एक बच्चे को उसकी मां द्वारा पालन किया जाता है। एक बच्चे को सभी सुख प्रदान करने के लिए वह सभी आवश्यक कार्य करती है।

सभी माताएं अपने बच्चों के जीवन में सभी बेहतरीन चीजें चाहती हैं, चाहे वह कोई खिलौना, कपड़े, शिक्षा और मूल्य हों। मातृत्व जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा है जो एक महिला के पास हो सकता है। यह बिना किसी वेतन के पूर्णकालिक नौकरी है, लेकिन एक बच्चे के लिए यह बहुत मायने रखता है। माँ का प्यार जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है, माँ का प्यार भगवान का आशिर्वाद जैसा है, माँ का प्यार ही सब कुछ है।

हम एक बच्चे के रूप में हमेशा अपनी मां को हल्के में लेते हैं लेकिन उसके बिना हमारा जीवन बेकार है। माँ ईश्वर का एक अनमोल उपहार है जिसे हमें प्यार और देखभाल के साथ रखने की आवश्यकता है। वह अपने मातृत्व का काम शुद्ध मन और पूरी निष्ठा से करती हैं। किसी भी बच्चे के लिए पहली शिक्षक उसकी मां होती है और अगर वह उसके मार्गदर्शन में जीवन के सबक सीखता रहे तो उसे सफलता की ऊंचाइयों को हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता।

हंस राम मीना
केंद्रीय जीएसटी कार्यालय, रत्नागिरी

कुछ अनकही बातें

अब आ ही रहे हो तो थोड़ा वक्त लेकर आना
बात पूरी न सही पर मुलाक़ात मुकम्मल हो जाए
तुम आओ तो सुनाऊ, कुछ मन के अवसादो को
गाठ खोलनी है गठरी की, कुछ बांध रखी हैं आशाये
जब हम थे साथ आकाश तले, वह सुकून संभाले रखा है
कैसे तुमको समझाऊँ कि मैंने, कैसे मन को बांधे रखा है
गुलाबी धूप, सांझ की छाया अब मुझसे ही मिलकर जाते है
चाय की प्याली, फुरसत की बाते, बारिश की बूंदे,
कुछ प्यारे वादे
सब मुझे देख मुस्कुराते हैं।
मेरे साथी मन के मीत, हर आहट मुझे चौकाती है
वह कहाँ गया जो कहता था, सदा रहूँगा संग तुम्हारे
यह तंज सुनाकर जाती है।
कब तक यूं ही दूर–दूर से हाल पूछकर,
खुद को मेरा बतलाओगे
जब तक समझोगे न तुम ह्रदय की पीड़ा,
कैसे अपने तुम कहलाओगे
कैसे स्वीकार करूँ मैं ये, कि पास तुम नहीं तुम्हारी छाया है
तुमने तो जानी सिर्फ वसंत ऋतु पतझड़ तो मेरे हिस्से आया है
गर सच हो खबर तुम्हारे आने की
इंतज़ार ये मेरा सफल हो जाए।
अब आ ही रहे हो तो थोड़ा वक्त लेकर आना
बात पूरी न सही पर मुलाक़ात मुकम्मल हो जाये।

मोनिका यादव
बैंक ऑफ़ इंडिया

इंटरनेट बना 'सच्चा साथी'

प्रगति के पथ पर मानव बहुत ऊंचा पहुंच गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कई ऐसे मुकाम प्राप्त हो गये हैं जो हमें जीवन की सभी सुविधाएं, सभी आराम प्रदान करते हैं। आज संसार को मानव ने अपनी मुट्ठी में समाया हुआ है। सबसे अधिक क्रांतिकारी कदम संचार क्षेत्र में उठाए गए हैं। अनेक नए स्रोत, नए साधन और नई सुविधाएं प्राप्त कर ली गई हैं जो हमें आधुनिकता के दौर में काफी ऊपर ले जाकर खड़ा करती है। ऐसे ही संचार साधनों में आज एक बड़ा ही सहज नाम है इंटरनेट। इसकी शुरूआत 1969 में एडवान्स्ड रिसर्च प्रोजेक्टस एजेंसिज द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के चार विश्वविद्यालयों के कम्पूटरों की नेटवर्किंग करके की गई थी। इसका विकास मुख्य रूप से शिक्षा, शोध एवं सरकारी संस्थाओं के लिए किया गया था। इसके पीछे मुख्य उदेश्य था संचार माध्यमों को वैसी आपात स्थिति में भी बनाए रखना जब सारे माध्यम निष्फल हो जाएं। 1971 तक इस कम्पनी ने लगभग दो दर्जन कम्प्यूटरों को इस नेट से जोड़ दिया था। 1972 में शुरूआत हुई ई–मेल अर्थात इलेक्ट्रोनिक मेल की जिसने संचार जगत में क्रांति ला दी।

धीरे–धीरे इंटरनेट के क्षेत्र में विकास हुआ। 1994 में नेटस्केप कम्यूनिकेशन और 1995 में माइक्रोसाफ्ट के ब्राउजर बाजार में उपलब्ध हो गए जिससे इंटरनेट का प्रयोग काफी आसान हो गया। 1996 तक इंटरनेट की लोकप्रियता काफी बढ़ गई। लगभग 4.5 करोड़ लोगों ने इंटरनेट का प्रयोग शुरू कर दिया।ई–कॉम की अवधारण काफी तेजी से फैलती गई। संचार माध्यम के नए–नए रास्ते खुलते गए। नई–नई शब्दावलियां जैसे ई–मेल, वेबसाइट, वायरस आदि इसके अध्यायों में जुड़ते रहे। वर्ष 2000 में इंटरनेट इतनी बढ़ गई कि इसमें कई तरह की समस्याएं भी उठने लगीं। कई नए वायरस समय–समय पर दुनिया के लाखों कम्प्यूटरों को प्रभावित करते रहे। इन समस्याओं से जूझते हुए संचार का क्षेत्र आगे बढ़ता गया। भारत भी अपनी भागीदारी इन उपलब्धियों में जोडता रहा। आज भारत में इंटरनेट कनेक्शनों और प्रयोगकर्ताओं की संख्या लाखों में है। इंटरनेट आधुनिक और उच्च तकनीकी विज्ञान का एक महत्वपूर्ण आविष्कार है। ये किसी भी व्यक्ति को दुनियां के किसी भी कोने में बैठे हुए महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करने की अद्‌भुत सुविधा प्रदान करता है। इसके माध्यम से हम लोग आसानी से किसी एक जगह रखे कम्प्यूटर को किसी भी एक या एक से अधिक कम्प्यूटर से जोड़कर जानकारी का आदान–प्रदान कर सकते है। इंटरनेट के द्वारा हम कुछ सेकेंडों में ही बड़े या छोटे संदेशों, अथवा किसी प्रकार की जानकारी एक कम्प्यूटर या डिजीटल डिवाइस (यंत्र) जैसे टैबलेट, मोबाइल, पीसी से दूसरे डिवाइस में काफी आसानी से भेज सकते है।

इंटरनेट के माध्यम से जीवन आसान हो गया है क्योंकि इसके द्वारा हम बिना घर के बाहर गये ही अपना बिल जमा करना, फिल्म देखना, व्यापारिक लेन–देन करना, सामान खरीदना आदि काम कर सकते है। अब ये हमारे जीवन का एक खास हिस्सा बन चुका है। हम कह सकते है कि इसके बिना हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

<u>इंटरनेट का उपयोग</u> – इसकी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, ये हर जगह इस्तेमाल होता है जैसे– कार्यस्थल, स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्रों पर, दुकान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट, मॉल और खास तौर से अपने घर पर हर एक सदस्यों के द्वारा अलग–अलग उद्देश्यों के लिये। इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉन्फ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजूद लोग एक–दूसरे से जुड़ सकते हैं। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट तथा रचनात्मक कार्यों में भाग लेना आदि कर सकता है। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तों से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकते है। इसकी सहायता से हम लोग विश्व की किसी प्रकार की भी जानकारी प्राप्त कर सकते है जैसे–कहीं की यात्रा के लिये उसका पता तथा सटीक दूरी आदि जान सकते है, वहां जाने के साधन आदि।

महामारी में इंटरनेट बना ''सच्चा साथी' : कोरोना वायरस महामारी से जब दुनिया सिमट गई तो इंटरनेट की दुनिया ने हमारे लिए अवसर के नए–नए दरवाजे खोल दिए। हम इंटरनेट के साथ प्रयोग करते गए और हमारा समय पार होता गया।इस बात में कोई दो राय नहीं कि आज की इस सदी में इंटरनेट सबसे अहम चीजों में से एक है। इंटरनेट के बिना ऐसा लगता है कि जीवन में कुछ कमी–सी है। जब पहली बार न्यूज

एजेंसियों ने चीन के वुहान में संदिग्ध बीमारी की रिपोर्ट की, तो वह इंटरनेट ही था जिसके माध्यम से पूरी दुनिया में इस रहस्यमय बीमारी की चर्चा हुई। समय बीतने के साथ चीन से छन-छन कर इस बीमारी के बारे में खबरें भी आने लगी। अखबार, टीवी और मैगजीन के बाद इससे जुड़ी जानकारी हमारे व्हाट्सऐप पर भी आने लगी। कुछ भ्रामक और कुछ गलत लेकिन कुछ खबरें असली भी थी।

इंटरनेट का सही इस्तेमाल करते हुए इस विषय पर दिलचस्पी रखने वालों ने और गहराई में जानना चाहा और इसके बारे में पढ़ा। समय गुजरता गया और इस रहस्यमय बीमारी का नाम पता चला, कोविड-१९, इंटरनेट की मदद से ही दुनिया भर के अरबों लोग कंप्यूटर और अन्य डिवाइस के जरिए एक दूसरे से जुड़ते हैं। अमेरिका में रहने वाला कोई छात्र चेन्नई में अपने परिवार को वहां के हालात के बारे में बताता, तो मुंबई में टेक्सटाइल मिल में काम करने वाला प्रवासी श्रमिक अपने गांव में वहां के हालात के बारे में वीडियो कॉल कर जानकारी देता।कोरोना वायरस महामारी के समय में इंटरनेट पर जानकारी की बाढ़ आ गई। कुछ जानकारी तो प्रमाणित थी लेकिन कुछ तथ्य गलत भी थे। खासकर इम्युनिटी बढ़ाने को लेकर तरह-तरह के पोस्ट सोशल मीडिया और व्हाट्सऐप ग्रुप पर शेयर किए जाने लगे। गुड मॉर्निंग और प्रेरणादायक संदेश की जगह इम्युनिटी मजबूत करने के नुस्खे बताए जाने लगे।

जब लॉकडाउन हुआ तो सब कुछ ठप हो गया। लोग घर में रहते हुए अपने माता-पिता, भाई-बहन और रिश्तेदारों से वीडियो कॉल और चैटिंग के जरिए संपर्क बनाने लगे। स्मार्टफोन और इंटरनेट के कॉकटेल ने ऐसे लोगों की जिंदगी आसान की जो संकट के समय में परिवार से दूर थे और उन्हें भावनात्मक जुड़ाव की जरूरत थी, ऐसे में वीडियो कॉल कर माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से बात कर उनका मन हल्का हो जाता और वे अजनबी शहर में अकेला महसूस नहीं करते। कोरोना महामारी के दौरान इंटरनेट कई लोगों के लिए लाइफ़लाइन बन गया है। करोड़ों लोगों को घर से काम करने, मेडिकल सेवाएं लेने और एक दूसरे से जुड़े रहने का एकमात्र ज़रिया इंटरनेट ही रह गया। कोरोना वायरस ने इंटरनेट पर हमारी निर्भरता को उजागर तो किया ही है, इसे मानवाधिकार की तरह देखे जाने वाले अभियान को भी प्रोत्साहन दिया है।

दफ्तर का काम जो पहले दफ्तर से ही किया जाता था वह भी घर से करना मुमकिन हो पाया और छुट्टी या फिर दफ्तर का काम खत्म कर लोग घर पर ही मनोरंजन के लिए मनचाहा शो, फ़िल्म या फिर अन्य मनोरंजन की सामग्री देखने लगे। मोबाइल पर तो इंटरनेट जैसे किसी खजाने से कम नहीं। घर के किसी कोने या फिर बाल्कनी में बैठकर अपनी मनचाही फिल्म या वेब सीरीज देख सकते हैं। जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वो यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना भी सीख रहे हैं।

सिर्फ मनोरंजन ही क्यों, अन्य जरूरी सेवाओं के लिए इंटरनेट हमारे साथ एक सच्चे दोस्त की तरह खड़ा है। फिर चाहे डॉक्टर से ऑनलाइन सलाह लेनी हो या अपनी मेडिकल रिपोर्ट देखनी हो। अब तो बीमारी से पीड़ित व्यक्ति भी अपनी तकलीफ दूर करने के लिए डॉक्टर से वीडियो कॉल के जरिए मदद कर सकते हैं। साथ में दफ्तर की बैठकें भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कर रहे हैं। हालांकि लॉकडाउन के बाद इंटरनेट की स्पीड कम हुई है और डेटा की खपत बढ़ी है। इसे देखते हुए नेटफ्लिक्स और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म ने वीडियो की क्वालिटी (गुणवत्ता) को थोड़ा कम किया है। देश में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाली संख्या 48 करोड़ से ज्यादा है और जानलेवा कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए सरकार ने जब लोगों से घर में ही रहने को कहा तो इंटरनेट उनके लिए मसीहा बनकर सामने आया। एक ही शहर में रहने के बावजूद लोग एक दूसरे से नहीं मिल पा रहे हैं तो इंटरनेट उन्हें करीब लाया है। अगर इंटरनेट नहीं होता तो कई कंपनियों का कामकाज चरमरा जाता लेकिन वीडियो कॉल ने ऐसा होने नहीं दिया। बीते कुछ दिनों में लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ वीडियो चैट के स्क्रीन शॉट साझा किए हैं। इससे यह बात साबित होती है कि जब कोरोना वायरस को शिकस्त देने लिए सामाजिक दूरी का नियम अपनाया जा रहा है तब इंटरनेट लोगों को आपस में जोड़ रहा है। वाट्सएप, फेसटाइम, फेसबुक मेसेंजर जैसी ऐप के अलावा जूम जैसी नई ऐप भी लोगों का अपनी ओर ध्यान खींच रही हैं। मुंबई में एक एनजीओ के साथ काम करने वाली श्रुति मेनन के लिए भी इंटरनेट काफी मददगार साबित हुआ है। वह मार्च के पहले हफ्ते से ही वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने सहकर्मियों के साथ समन्वय कर रही हैं। कई अस्पताल ऑनलाइन परामर्श दे रहे हैं। डॉक्टर और मरीज के बीच वीडियो सत्र होते हैं। दवा का ई-पर्चा देते हैं और परामर्श शुरू होने से पहले फीस का भुगतान करना होता है। इसके अलावा लोग एक दूसरे के

विश्व हिंदी दिवस समारोह

विश्व हिंदी दिवस के सुअवसर पर बैंक ऑफ़ इंडिया आंचलिक कार्यालय द्वारा गतिमंद बच्चों के स्कूल अविष्कार को संगणक संच अध्यक्ष श्री संतोष सावंतदेसाई ने प्रदान किया। साथ में स्कूल के मान्यवर

सीमा शुल्क मंडल

बैंक ऑफ़ इंडिया

कोंकण रेलवे

पिछली बैठक की झलकियां...

पिछली बैठक की झलकियां...

समिति के सर्व श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु सहयोग सम्मान पत्र प्रदान कर गौरव किया गया।
श्री उदय पी मदनगेरी,
मुख्य निर्माण अभियंता, एनपीसीएल

समिति के सर्व श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु सहयोग सम्मान पत्र प्रदान कर गौरव किया गया।
श्री पी के कुराडे,
वरिष्ठ अभियंता कोंकण रेलवे

हिंदी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

भारतीय तटरक्षक अवस्थान

भारत संचार निगम लिमिटेड

आकाशवाणी

पवन गुब्बारा वेधशाला

साथ ऑनलाइन गेम्स, खासकर लूडो भी खेल रहे हैं, जिसमें भाग लेने वाले लोग देश के किसी भी हिस्से के हो सकते हैं। 'सेलुलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया' (सीओएआई) के महानिदेशक रंजन मैथ्यू ने बताया कि इंटरनेट पर निर्भरता बढ़ने से देश में डेटा की खपत में कम से कम 20-30 फीसदी का इजाफा हुआ है। इसे देखते हुए, नेटफ्लिस और फेसबुक जैसे प्लेटफार्म ने वीडियो क्वलिटी (गुणवत्ता) को कम किया है। इस बाबत सीओएआई ने सरकार को पत्र लिखकर आग्रह किया था कि नेटवर्क पर पड़ने वाले बोझ को कम करने के लिए उपाय किए जाएं। बेंगलुरु स्थित 'सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसाइटी' के गुरशबद ग्रोवर का कहना है कि देश में इंटरनेट का तंत्र ऐसा नहीं है जो चरमरा जाए।

स्कूल की शिक्षा भी अब इंटरनेट के माध्यम से दी जा रही है और इसके लिए परिवार पर घर में लैपटॉप या फिर स्मार्टफोन खरीदने का दबाव है। कई लोग स्मार्टफोन तो खरीद लेते हैं लेकिन हर महीने इंटरनेट डाटा खरीदन पड़ता है। कोरोना काल से पहले अभिभावक इस खर्च से बच जाते थे। गांव और सुदूर इलाकों में इंटरनेट से जुड़ना अभी भी बड़ी चुनौती है।धारणा बन गई है कि स्कूलों के बंद रहने के बीच ऑनलाइन पढ़ाई एक अच्छा विकल्प बन गई है, लेकिन असल में ऑनलाइन शिक्षा का दायरा बेहद सीमित है।

निष्कर्ष –इससे ऑनलाइन संपर्क तेज और आसान हो गया है जिससे संदेश या विडियो कॉनफ्रेंस के द्वारा दुनिया में कहीं भी मौजूद लोग एक–दूसरे से जुड़ सकते है। इसकी मदद से विद्यार्थी अपनी परीक्षा, प्रोजेक्ट, तथा रचनात्मक कार्यों में भी भाग ले सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों और दोस्तों से ऑनलाइन जुड़कर कई सारे विषयों पर चर्चा कर सकते है। इंटरनेट की सहायता से हम लोग विश्व की किसी प्रकार की भी जानकारी मात्र चंद सेकेंडों में प्राप्त कर सकते है। वास्तव मे इंटरनेट ने मानव इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है।

प्रिया पोकले
कोकण रेलवे

कर्तव्य

सुनो गौर से ऐ जहाँ
वयम रक्षाम: धर्म मेरा,
तट रक्षा करना कर्म मेरा,
घुसपैठियों को हम पाकर लाते हैं,
तटरक्षक बल कहलाते हैं.

और देखो आगे क्या होता है,
मच्छुवारे हो या हो नाविक
हम इनकी रक्षा करते हैं
और देश के तस्करों को
धर दबोच लाते हैं,
तटरक्षक बल कहलाते हैं.

आंधी हो या तूफ़ान
तटरक्षक पोत आगे बढते जाते हैं
देश की तट रक्षा खातिर
समुद्र की लहरों में लहराते हैं
तटरक्षक बल कहलाते हैं.

और अंत में यह कह दूं
हम इस तटरक्षक बल के वीर सैनिक
भारत की तट रक्षा रखेंगे
यूं ही नहीं समुद्र–सम्पदा
की रक्षा करते हैं
तटरक्षक बल कहलाते हैं.

मौ. नदीम
भारतीय तटरक्षक अवस्थान,
रत्नागिरी

एहसास

हसरतो का बोझ है
ग़मो में भी करता मौज है
ये आम आदमी है साहब मरता हर रोज है
मुट्ठी भर कमाई है
आँसुओं में ज़िंदगी समाई है
खुशियों को बेचकर बच्चों की किस्मत खरीद लाई है
अँधेरे में भी रोशनी की करता ये खोज है
ये आम आदमी है साहब ज़िंदगी से लड़ता हर रोज है
सुखों से दूरी बनाकर
दु:खों से नजदीकियाँ बनाई है
परिवार को खुशी देने के लिए
ग़मो को ढोता हर रोज है
ये आम आदमी है साहब
एहसासों का सौदा करता हर रोज है
दिल से सोचता है

हज़ार ख्वाब टूटे मगर
दिल में रोता है
हो लाख अरमान फिर भी
सब कुछ छोड़ देता है
जरूरत हो कितनी भी
नज़रअंदाज़ करता है
थोड़े में ज्यादा जियो
ऐसी इसकी सोच है
ये आम आदमी है
साहब अरमानो को
मारता हर रोज है
हो थकान कितनी भी
जख्म हो गहरे कितने भी
जिस्म झुलस जाए कितना भी
ज़िन्दगी में खतरे हो कितने भी
अकेला इंसान जज्बातों की फौज है
ये आम आदमी है साहब
मौत को हराता हररोज है

मनीष पड़ियां
बैंक ऑफ़ इंडिया

सरफेसी अधिनियम का पूर्ण रूप वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुननर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 है। बैंक इस अधिनियम का उपयोग खराब ऋण (एनपीए वसूली) के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में करते हैं। यह संभव है जहां गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों को बैंक को लगाए गए प्रतिभूतियों द्वारा समर्थित किया जाता है। ऋण चूक पर, बैंक अदालत के हस्तक्षेप के बिना प्रतिभूतियों (कृषि भूमि को छोड़कर) को जब्त कर सकते हैं। सरफेसी केवल सुरक्षित ऋणों के लिए प्रभावी है जहां बैंक अंतर्निहित सुरक्षा को लागू कर सकते हैं जैसे हाइपोथिकेशन, गिरवी और बंधक। ऐसे मामलों में, अदालत के हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है, जब तक कि सुरक्षा अमान्य या धोखाधड़ी न हो। हालांकि, यदि विचाराधीन संपत्ति एक असुरक्षित संपत्ति है, तो बैंक को चूककर्ताओं के खिलाफ सिविल मामला दायर करने के लिए अदालत का रुख करना होगा।

अधिनियम की पृष्ठभूमि / Background of the Act :

चूक ऋणों की वसूली के लिए अधिनियमित पिछला कानून बैंकों और वित्तीय संस्थानों के देय ऋणों की वसूली अधिनियम, 1993 था। यह अधिनियम नरसिहम समिति की सिफारिशों को सरकार को सौंपे जाने के बाद पारित किया गया था। इस अधिनियम ने लगातार बढ़ती गैर वसूली बकाया के संबंध में विवादों के शीघ्र निर्णय के लिए ऋण वसूली न्यायाधिकरण और ऋण वसूली अपीलीय न्यायाधिकरण जैसे मंच बनाए थे। हालांकि, अधिनियम में कई खामियां थीं और इन खामियों का उधारकर्ताओं के साथ-साथ वकीलों द्वारा भी दुरुपयोग किया गया था। इससे सरकार को अधिनियम का आत्मनिरीक्षण करना पड़ा और श्री अंध्यारूजिना के तहत एक और समिति को बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों की जांच करने और कानूनी प्रणाली में बदलाव पर विचार करने के लिए नियुक्त किया गया था।

इस समिति ने प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण कंपनियों की स्थापना के लिए एक नया कानून बनाने और बैंकों और वित्तीय संस्थानों को गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों का कब्जा लेने के लिए सशक्त बनाने की सिफारिश की। इस प्रकार, सरफेसी अधिनियम के माध्यम से, पहली बार, सुरक्षित लेनदारों को अदालत के हस्तक्षेप के बिना अपने बकाया की वसूली करने का अधिकार दिया गया था। हालांकि, जैसे ही अधिनियम पारित किया गया, इसके कार्यान्वयन को अदालत में चुनौती दी गई और इससे इसे लागू होने में 2 साल की देरी हुई। भारत संघ में, सुप्रीम कोर्ट ने सरफेसी अधिनियम की वैधता को बरकरार रखा।

खाता एनपीए हो जाते ही ....

1. सरफेसी के तहत आगे बढ़ने के लिए सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी लें (खाते के एनपीए बनने के अगले ही दिन)

2. स्केल 3 शाखा और उससे ऊपर के लिए प्राधिकरण शाखा प्रबंधक के पास है।

3. स्केल 2 शाखा तक का प्राधिकरण मुख्य प्रबंधक, एआरडी है (शाखा को प्रस्ताव रखना चाहिए)

(आईटी पोर्टल पर अपलोड की गई एनपीए नीति के तहत सरफेसी कार्रवाई के अनुमोदन का प्रारूप प्रदान किया जाता है)

13/2 नोटिस जारी ISSUE 13/2 NOTICE

(अनुमोदन प्राप्त करने के तुरंत बाद)

(केवल अधिकृत अधिकारियों द्वारा जारी किया जा सकता है)

13/2 जारी करते समय सावधानी बरतनी चाहिए

1. बैंक के पास उधारकर्ता की कुछ सुरक्षित संपत्ति होनी चाहिए

2. संपत्ति कृषि भूमि नहीं होनी चाहिए

3. संविदात्मक बकाया राशि १ लाख रुपये से कम नहीं होनी चाहिए और एनपीए ऋण खाते की राशि मूलधन और ब्याज के 20% से कम नहीं होनी चाहिए।

4. शाखाओं को नोटिस जारी करते समय प्रचुर सावधानी बरतनी चाहिए कि 60 दिनों के नोटिस की तारीख पर सुरक्षा दस्तावेज पूरी तरह से लागू (12 महीने में अग्रिम) होने चाहिए। उदाहरण के लिए, एल 444 सी को समय की रोक नहीं दी जानी चाहिए।

नोटिस जारी करने का अनुमोदन करने वाले अधिकारी को क्रेडिट प्रस्ताव को मंजूरी नहीं देनी चाहिए थी।

5. उधारकर्ता, सह-उधारकर्ता और गारंटर को भी नोटिस जारी किया जाना चाहिए।

6. मृतक खातों के मामले में, सभी कानूनी उत्तराधिकारियों को नोटिस जारी किया जाएगा।

7. नोटिस की सेवा रजि. पोस्ट/एडी, स्पीड पोस्ट, कुरियर, ई-मेल, यूपीसी, फैक्स आदि द्वारा की जानी है। सेवा की डिलीवरी न होने या सेवा से बचने के मामले में, सेवा को भवन के विशिष्ट भाग पर नोटिस चिपकाकर प्रभावित किया जाना है जहां उधारकर्ता / गारंटर रहता है और / या व्यवसाय करता है और उस संपत्ति पर भी जिसमें सुरक्षा हित बनाया गया है। इसके अलावा इसे दो प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित करने की भी आवश्यकता है, एक स्थानीय भाषा में जिसका उस इलाके में पर्याप्त प्रसार हो और दूसरा अंग्रेजी में। धारा 13 (2) नोटिस की सेवा का प्रमाण (पावती, डाक रसीद, ट्रैकिंग रिपोर्ट आदि) अदालत में बचाव करने के लिए रिकॉर्ड पर होना चाहिए।

प्राप्त आपत्तियां, यदि कोई हों बैंक द्वारा सरफेसी अधिनियम की धारा 13 (2) के तहत नोटिस जारी करने के बाद, यदि कोई उधारकर्ता/गारंटर कोई अभ्यावेदन करता है या कोई आपत्ति उठाता है, तो बैंक को, एक सुरक्षित लेनदार होने के नाते, ऐसे अभ्यावेदन या आपत्तियों पर विचार करना होगा और यदि बैंक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि ऐसा अभ्यावेदन या आपत्ति स्वीकार्य या मान्य नहीं है, फिर बैंक को ऐसे अभ्यावेदन या आपत्ति प्राप्त होने के पंद्रह दिनों के भीतर उधारकर्ता को अभ्यावेदन या आपत्तियों को स्वीकार न करने के कारणों के साथ अनिवार्य रूप से सूचित करना होगा।

आंचलिक प्रबंधक की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय समिति को सभी मामलों में उत्तर को अंतिम रूप देना चाहिए, चाहे कोई भी राशि हो। 13/4 जारी करना (उधारकर्ता द्वारा नोटिस प्राप्त करने के 60 दिन पूरे होने पर तुरंत 13/2 और 13/4 में संपत्ति का विवरण अलग-अलग नहीं होना चाहिए।

मुकुल बंसल
विधि अधिकारी, बैंक ऑफ़ इंडिया

एटीएम का सुरक्षित उपयोग कैसे करें

एटीएम को सुरक्षित रूप से उपयोग करने के लिए सामान्य ज्ञान आपका सबसे अच्छा मार्गदर्शक है। अगर आपको संदेह है कि कुछ ठीक नहीं है, तो अपनी प्रवृत्ति पर भरोसा करें। एटीएम या बैंक शाखा का उपयोग करें जहां आप अधिक सहज महसूस करते हैं।

* यदि संभव हो तो ऐसी मशीन का उपयोग करें जो बैंक स्थान में स्थित हो। अपराधियों के लिए ऐसी मशीन से छेड़छाड़ करना आसान हो सकता है जो गैर-बैंक स्थान पर है, जैसे किराने की दुकान, डेली या शॉपिंग मॉल। अपने पास बैंक के स्वामित्व वाले या संचालित एटीएम को खोजने के लिए, न्यूयॉर्क राज्य मानचित्र में बैंक के स्वामित्व वाले एटीएम स्थानों के लिए हमारी ओपन डेटा साइट पर जाएं ।

* एक ऐसा एटीएम चुनें जो अच्छी तरह से रोशन हो और निगरानी कैमरे या सुरक्षा गार्ड द्वारा निगरानी की जाती हो।

* यदि आप एक इनडोर एटीएम का उपयोग कर रहे हैं जिसके लिए दरवाजा खोलने के लिए आपके कार्ड की आवश्यकता होती है, तो किसी ऐसे व्यक्ति को आने से बचें जिसे आप नहीं जानते हैं। एक बार दालान के अंदर, सुनिश्चित करें कि दरवाजा आपके पीछे पूरी तरह से बंद है। अपने लेन-देन के साथ आगे बढ़ने से पहले, किसी ऐसे व्यक्ति की निगरानी से बचने के लिए चारों ओर देखें, जो आपके थोड़े से संदेह को जगा सकता है।

* एटीएम में अपना समय कम करें। अपना कार्ड तैयार रखें। यदि आप एक लिफाफे का उपयोग कर जमा कर रहे हैं, तो एटीएम में जाने से पहले लिफाफे को सील कर दें।

* जब आप अपनी व्यक्तिगत पहचान संख्या (पिन) टाइप करते हैं तो एटीएम कीबोर्ड को कवर करने के लिए अपने खाली हाथ का उपयोग करें।

* यदि एटीएम आपका कार्ड निगल जाता है तो अपना पिन दोबारा दर्ज न करें - बैंक से तुरंत संपर्क करें।

* यदि आपको कुछ भी संदिग्ध दिखाई देता है, तो तुरंत अपना लेन-देन रद्द करें और निकल जाएं। जितनी जल्दी हो सके अपने वित्तीय संस्थान से पुष्टिकरें कि लेन-देन वास्तव में रद्द कर दिया गया था।

* एटीएम छोड़ने से पहले अपने पैसे, कार्ड और रसीद को अपने बटुए में या अपने व्यक्ति पर सुरक्षित रूप से रखना सुनिश्चित करें।

स्रोत - वित्तीय विभाग

मोहित चौधरी
बैंक ऑफ़ इंडिया

जीवन में सफलता का रहस्य

शहर के एक प्रसिद्ध कॉलेज का आज वार्षिक समारोह था। कॉलेज में बहुत से विद्वानों को बुलाया गया था। कॉलेज के सभी छात्र वार्षिक समारोह में आए हुए थे। वार्षिक समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध प्रेरक वक्ता को बुलाया गया था। समारोह के दौरान बहुत से ज्यादा प्रेरक वक्ता से तरह-तरह के प्रश्न पूछ रहे थे तथा प्रेरक वक्ता इन प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे तथा प्रेरक वक्ता उनके प्रश्नों के प्रभावशाली और कारगर उत्तर दे रहे थे।

कुछ समय बाद प्रेरक वक्ता बोले मैं आपको कुछ देना चाहता हूं जिसे करके आप अपने जीवन में कुछ अच्छा सीख सकेंगे ।क्या आप तैयार हैं? सभी छात्रों ने एक साथ उत्तर दिया, 'हाँ ! हम तैयार है!! प्रेरक वक्ता बोले, 'मैं आपको यह सीखाना चाहता हूँ कि आजकल अधिकतर लोग कठिन मेहनत करने, लगन और योग्य होने के बाद भी असफल क्यों हो जाते हैं? तभी प्रेरक वक्ता ने प्रत्येक छात्र को पांच प्रश्न-पत्र दिए जिसमे से प्रत्येक पर 10-10 प्रश्न लिखे हुए थे।प्रेरक वक्ता बोले,'आपके पास 10 मिनट है इसी समय मे आपको इन प्रश्नों के उत्तर को लिखना है। प्रेरक वक्ता के ओके कहते हीसमय शुरु हो जाता है। समय की तुलना में प्रश्न अधिक होने के बाद भी छात्र प्रश्नों को हल करने लगते हैं। 10 मिनट बाद सभी छात्रों से प्रश्न-पत्र ले लिए जाते हैं।

अब प्रेरक वक्ता ने छात्रों से पूछा 'आपमें से कितने ऐसे छात्र हैं जिन्होंने 5 में से कम से कम एक प्रश्न पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।'बहुत ही कम छात्रों ने अपना हाथ उठाकर एस(yes)! कहा। फिर प्रेरक वक्ता बोले,जिन छात्रों ने पांच प्रश्न पत्रों में से कम से कम एक प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं वह सभी उत्तीर्ण हैं और जिन्होंने किसी भी एक प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है,वह सभी अनुत्तीर्ण माने जायेंगे। अब सभी छात्र एक दूसरे के चहरों को देखने लगे क्योकि उन्हें यह बात और इससे मिली सीख जीवन मे आपके सामने जो अवसर होते है,वह इन्ही प्रश्न-पत्रों की तरह होते है यानि आपको जीवन में इन प्रश्न पत्रों की तरह बहुत से अवसर मिलते है। कहानी में बताया गया एक प्रश्न-पत्र एक अवसर के समान है,जो व्यक्ति किसी एक प्रश्न-पत्र को समय रहते पूरा हल कर लेते हैं,वह एक मंजिल पर पहुंचर सफलता प्राप्त करतें है और जो प्रश्न तो बहुत सारे हल करते हैं लेकिन प्रश्न-पत्रों के बदलने (अवसर बदलने) के कारण किसी एक को भी पूरा हल नहीं कर पाते हैं,वह असफल हो जाते हैं।

ऐसा नहीं है कि इस तरह असफल होने वाले लोग मेहनत नहीं करते या ऐसे लोगों में लगन की कमी और योग्यता की कोई कमी होती है। इतना कुछ होने के बाद भी इस प्रकार असफल हुए लोगों में धैर्य की बहुत कमी मिलती है,उनका खुद में कम विश्वास साफ़ दिखता है। अधिकतर लोग एक अवसर को अपनाकर सफलता के रास्ते की ओर चल देते हैं लेकिन यदि रास्ते में कोई परेशानी आती हैं या किसी दूसरे के कहने पर अब दूसरा अवसर तलाशने लगते हैं।

दूसरे अवसर के मिल जाने पर अब वह सफलता पाने के लिए दूसरे रास्ते पर चलने लगते हैं। अगर सफलता के इस रास्ते में कोई परेशानी आती है या फिर किसी और अच्छे अवसर को देखकर फिर से वह अवसर और रास्ता बदलकर तीसरे अवसर और रास्ते को अपनाकर उसकी ओर चल देते हैं।

उनका यही चलते रहता है और अंत मे वह असफल हो जाते हैं। जबकि बहुत कम ऐसे भी लोग होते हैं जो जीवन में मिलने वाले सीमित समय को देखकर अपनी इच्छा के किसी एक अवसर या रास्ते को अपनाकर अपनी सफलता के रास्ते पर चल देते हैं।रास्ते में आयीं परेशानियाँ को हल करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। वह किसी दूसरे के कहने पर या परेशानियों से घबराकर अपना रास्ता खो नहीं देते । दोस्तों! यही सफलता का रहस्य है।जिंदगी में समय सीमित है। यदि सफल होना है तो अपने दिल की आवाज सुनते हुए अपनी पसंद का एक अवसर या रास्ता चुन लीजिए और एक अवसर पर चलने का निर्णय लेकर अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़िए। यदि सफलता के रास्ते में कठिनाइयां आती है तो रस्ता बदलने का बहाना मत बनाइए बल्कि कठिनाइयों को हल करते हुए मंजिल की ओर बढ़ जाइए। अपने कार्य को पसंद करते हुए सफलता की आशा की किरण को जलाए रखिए।स्वयं में विश्वास रखिए और एक विजेताओं की तरह सफलता को प्राप्त कर लिजिए।

मंजिल उन्ही को मिलती है जिनके सपनो में जान होती है,

पंखो से कुछ नहीं होता हौसलों से ही उड़ान होती है!!

श्रेया काकडे
वरिष्ठ लिपिक, कोंकण रेलवे

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के योगदान

डॉ. अम्बेडकर जयंती भारत में ही नही बल्कि पूरे विश्वभर में हर साल 14 अप्रैल को डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को सम्मान देने के लिए मनाई जाती है। इस वर्ष 14 अप्रैल 2023 को डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर की 132वी जयंती मनाई गई। सैकड़ों देशों और करोड़ों अंबेडकरवादी अनुयायियों के द्वारा मनाई जाने वाली अंबेडकर जयंती विश्व की सबसे बड़ी जयंती मानी जाती हैं। इस शुभ दिन पर हम डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के योगदान, सिद्धि को याद करते हैं। दलित डॉ अम्बेडकर को अपना भगवान मानते हैं क्योंकि उनका प्रमुख योगदान दलितों को दूसरों के समान समाज में समान अधिकार, स्थिति और सम्मान प्राप्त करने में मदद करना था।

भीमराव रामजी अंबेडकर, जिन्हें बाबासाहेब के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय न्यायविद, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे, जिन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और महिलाओं और श्रम के अधिकारों का समर्थन करते हुए अछूतों (दलितों) के खिलाफ सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अभियान चलाया।

उनका जन्म 14 अप्रैल, 1891 को भारत के महू, मध्यप्रदेश के एक दलित महार परिवार में हुआ था और इसलिए हम इस दिन को डॉ अंबेडकर की जयंती – अंबेडकर जयंती के रूप में मनाते हैं। भीमाबाई और रामजी मालोजी सकपाल डॉ. अम्बेडकर के माता–पिता थे। डॉ. अम्बेडकर अपने माता–पिता की 14वीं और आखिरी संतान थे। बाबासाहेब का असली उपनाम अंबावाडेकर था लेकिन उनके शिक्षक महादेव अम्बेडकर ने उन्हें स्कूल के रिकॉर्ड में अम्बेडकर का उपनाम दिया। उन्हें ज्यादातर बाबासाहब के नाम से जाना जाता है। अम्बेडकर जयंती ज्यादातर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में दलितों द्वारा मनाई जाती है क्योंकि उन्होंने हमेशा दलितों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में बहुत अन्याय का सामना किया है। उनकी शिक्षा यात्रा दूसरों की तुलना में ज्यादा आसान नहीं थी। आजादी के बाद, दलितों को अछूत माना जाता था। उन्हें हर जगह बहुत भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर आगे आए और उनके लिए लड़े और दलितों को उनके समान अधिकार और स्वतंत्रता दिलाई। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय कानून और शिक्षा को बनाने में बहुत योगदान दिया। डॉ. अम्बेडकर ने एक राजनीतिक दल का गठन किया जिसे इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी कहा गया। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, वह पहले कानून मंत्री और भारतीय संविधान बनाने वाले समिति के अध्यक्ष थे।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने भारत के कानून, व्यवस्था और संविधान के निर्माण में बहुत योगदान दिया। वे हमेशा दलितों के साथ हो रहे भेदभाव के खिलाफ थे। उन्होंने दलितों के समर्थन में नए कानून बनाए और उन्हें अन्य जातियों के समान शिक्षा और समान अधिकार दिए। डॉ अंबेडकर की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक भारतरत्न था जो उन्हें 1990 में दिया गया। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की थी। अंबेडकर दुनिया भर के युवा वकीलों के प्रेरणास्रोत हैं।

डॉ. अम्बेडकर भारत के इतिहास के महानतम नेताओं में से एक थे। भारतीय कानून और संविधान में उन्होंने जो योगदान दिया है, उसके लिए हमें उन्हें सम्मान और श्रद्धांजलि देनी चाहिए। उन्होंने दलितों की मदद की और यह सुनिश्चित किया कि उन्हें वह मिले जिसके वे हकदार हैं! उनकी वजह से बहुत से छात्र कम शुल्क पर भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हैं। ऐसे लोग हैं जो आर्थिक रूप से पिछड़े हैं और उच्च स्तरीय संस्थान में शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते हैं, लेकिन बाबासाहेब के कारण वे भी अपने बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हैं जो भारत के भविष्य को सुरक्षित करेगा।

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार है

1. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर विदेश से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट (पीएचडी) की डिग्री प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे।
2. डॉ. अम्बेडकर ही एकमात्र भारतीय हैं जिनकी प्रतिमा लंदन के संग्रहालय में कार्लमार्क्स के साथ लगी हुई है।
3. भारतीय तिरंगे में अशोक चक्र को स्थान देने का श्रेय भी डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को ही जाता है। हालांकि राष्ट्रीय ध्वज को पिंगली वेंकय्या ने डिजाइन किया था।
4. नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन अर्थशास्त्र में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर को अपना पिता मानते थे।
5. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर 64 विषयों में मास्टर थे। उन्हें हिंदी, पाली, संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, मराठी, फारसी और गुजराती जैसी ९ भाषाओं का ज्ञान था। इसके अलावा उन्होंने लगभग. 21 वर्षों तक विश्व के सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

6. लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में बाबासाहेब ने 8 साल की पढ़ाई सिर्फ 2 साल 3 महीने में पूरी की. इसके लिए उन्होंने 21 घंटे पढ़ाई की।

7. महंत वीर चंद्रमणि, एक महान बौद्ध भिक्षु जिन्होंने बाबासाहेब को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी, उन्हें इस युग का आधुनिक बुद्ध कहा।

8. बाबासाहेबलंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डॉक्टर ऑलसाइंस नामक मूल्यवान डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले दुनिया के पहले और एकमात्र व्यक्ति हैं। कई बुद्धिमान छात्रों ने इसके लिए प्रयास किया है, लेकिन वे अब तक सफल नहीं हो पाए हैं।

9. दुनिया भर में जिस नेता के नाम पर सबसे ज्यादा गाने और किताबें लिखी गई हैं वह डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर हैं।

10. गवर्नर लिनलिथगो और महात्मा गांधी का मानना था कि बाबा साहेब 500 स्नातकों और हजारों विद्वानों से अधिक बुद्धिमान हैं।

11. बाबासाहेब दुनिया के पहले और एकमात्र सत्याग्रही थे, जिन्होंने पीने के पानी के लिए सत्याग्रह किया था।

12. 1954 में नेपाल के काठमांडू में आयोजित विश्व बौद्ध परिषद में बौद्ध भिक्षुओं ने डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को बौद्ध धर्म की सर्वोच्च उपाधि बोधिसत्व प्रदान की थी। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक बुद्ध और उनका धम्म भारतीय बौद्धों का ग्रंथ है।

13. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने तीन महापुरुषों, भगवान बुद्ध, संत कबीरदास जी और महात्मा ज्योतिराव फुले को अपना गुरु माना था।

14. RBI की अवधारणा 1 अप्रैल 1935 को बाबा साहेब अम्बेडकर की पुस्तक रुपये की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसके समाधान के दिशानिर्देशों द्वारा की गई थी।

15. दुनिया में हर जगह बुद्ध की बंद आंखों वाली मूर्तियाँ और चित्र दिखाई देते हैं, लेकिन बाबासाहेब, जो एक अच्छे चित्रकार भी थे, ने बुद्ध की पहली पेंटिंग बनाई जिसमें बुद्ध की आँखें खुल गई।

16. डॉ.बाबासाहेब की पहली प्रतिमा वर्ष 1950 में उनके जीवित रहने पर बनाई गई थी और यह प्रतिमा कोल्हापुर में स्थापित है।

17. 27 नवंबर, 1942 को नई दिल्ली में आयोजित भारतीय श्रम सम्मेलन के 7वें सत्र में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने कार्य अवधि को 12 से घटाकर 8 घंटे कर दिया।

18. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने वेतनमान का संशोधन,छुट्टी लाभ, और महंगाई भत्ता (डीए) की भी स्थापना की।

19. भारतीयों को लिंग या जाति या वर्ग या साक्षरता या धर्म के पक्षपात के बिना वोट देने का अधिकार है। यह डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ही थे जिन्होंने साउथ–बोरोह आयोग के समक्ष 'सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार' के लिए भारत में पहले व्यक्ति के रूप में आवाज उठाई थी।

20. क्रांतिकारी डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वायसराय कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री के रूप में औद्योगिक श्रमिकों के मामले में भारत में समान काम के लिए समान वेतन लाया।

21. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने भारत में महिला श्रमिकों के लिए कई कानून बनाए जैसे 'खान मातृत्व लाभ अधिनियम','महिला श्रम कल्याण कोष', 'महिला और बाल श्रम संरक्षण अधिनियम', 'महिला श्रम के लिए मातृत्व लाभ' और 'पुनर्स्थापना'कोयला खदानों में भूमिगत कार्य पर महिलाओं के नियोजन पर प्रतिबंध'।

22. कर्मचारी राज्य बीमा (ESI) श्रमिकों को चिकित्सा देखभाल, चिकित्सा अवकाश, काम के दौरान लगी चोटों के कारण होने वाली शारीरिक अक्षमता, कामगारों के मुआवजे और विभिन्न सुविधाओं के प्रावधान में मदद करता है। डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर ने श्रमिकों के लाभ के लिए इसे अधिनियमित किया और लाया। कर्मचारियों की भलाई के लिए बीमा अधिनियम लाने वाला पूर्वी एशियाई देशों में भारत पहला देश था।

23. डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर ने श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा उपायों की रक्षा के लिए 1942 में 'त्रिपक्षीय श्रम परिषद' की स्थापना की, श्रमिकों और नियोक्ताओं को श्रम नीति के निर्माण में भाग लेने का समान अवसर दिया।

24. श्रम को 'समवर्ती सूची' में रखा गया, 'मुख्य एवं श्रम आयुक्तों' की नियुक्ति की गई, 'श्रम जांच समिति' का गठन किया गया।

25. आज भारत में यदि 'रोजगार कार्यालय' हैं, तो यह डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की दूर दृष्टि के कारण है।

26. यदि श्रमिक अपने अधिकारों के लिए हड़ताल पर जा सकते हैं, तो यह बाबासाहेबअम्बेडकर के कारण है – उन्होंने श्रमिकों द्वारा 'हड़ताल के अधिकार' को स्पष्ट रूप से मान्यता दी थी।

27. डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर दामोदर घाटी परियोजना, भाखड़ा–नंगल बांध परियोजना, सोन नदी घाटी परियोजना और हीराकुंड बांध परियोजना के निर्माता थे। 1945 में, डॉ. बाबासाहेबअम्बेडकर की अध्यक्षता में, बहुउद्देशीय उपयोग के लिएमहानदी को नियंत्रित करने के संभावित लाभों में निवेश करने का निर्णय लिया गया।

28. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने मध्य प्रदेश को उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में विभाजित करने का सुझाव दिया था। उन्होंने इन राज्यों के बेहतर विकास के लिए 1955 में पटना और रांची के साथ बिहार को दो भागों में विभाजित करने का भी सुझाव दिया था। करीब 45 साल बाद दोनों राज्यों का बंटवारा हुआ और साल

2000 में छत्तीसगढ़ और झारखंड का गठन हुआ।

29. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने ग्रिड सिस्टम के महत्व और आवश्यकता पर जोर दिया जो आज भी सफलतापूर्वक काम कर रहा है। यदि आज बिजली इंजीनियर प्रशिक्षण के लिए विदेश जा रहे हैं, तो इसका श्रेय डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को फिर से जाता है, जिन्होंने श्रम विभाग के नेता के रूप में विदेशों में सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने की नीति तैयार की।

30. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने बिजली व्यवस्था के विकास, हाइड्रो पावरस्टेशन साइटों, हाइड्रोइलेक्ट्रिक सर्वेक्षण, बिजली उत्पादन की समस्या का विश्लेषण और थर्मल पावर स्टेशन की जांच के लिए सेंट्रल टेक्निकल पावर बोर्ड (सीटीपीबी) की स्थापना की।

31. डॉ बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान में अनुच्छेद 370 का विरोध किया, जो जम्मू और कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा देता है, और इसे उनकी इच्छा के विरुद्ध रखा गया था।

32. डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने भारत के पहले कानून मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया जब तत्कालीन प्रधान मंत्री नेहरू द्वारा भारतीय महिलाओं के लिए महिलाओं के अधिकारों के उनके महान 'हिंदू कोड बिल' को हटा दिया गया। भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए डॉ. बाबा साहेब के योगदान को पूरी तरह से अनदेखा और छुपाया गया है। तीन साल तक उन्होंने विधेयक को पारित कराने के लिए संघर्ष किया। यह भारत में अब तक का सबसे बड़ा सामाजिक सुधार था। यह महिलाओं के अधिकारों की घोषणा के अलावा और कुछ नहीं है। इसने भारतीय महिलाओं को सम्मान वापस देने और पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार देने की बात कही।

33. हर पांच साल में एक वित्त आयोग शुरू करने वाले डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर थे।

हंस राम मीना
केंद्रीय जीएसटी कार्यालय, रत्नागिरी

बेचैन धरा

कर रही चित्कार धरा,
जन जन को रही पुकार धरा।
खुद का अस्तित्व बचाने को,
कर रही गुहार धारा।

सूख रहे हैं विटप बिहड़,
हो रही हरियाली बंजर।
हरीतिमा बचाने को,
कर रही गुहार धरा।

प्यास पानी को तरस रहे हैं,
ताल तलैया सुख रहे है।
जल स्रोत बचाने को,
कर रही गुहार धरा।

उगल रहे धुआं कल कारखाने,
कर रहे वायु प्रदूषित जाने अंजाने।
जहरीली हवा से बचने को,
कर रही गुहार धारा।

शैल निशब्द खड़े पड़े हुए उग्र ताप को झेल रहे हैं।
घोर उष्णता से बचने को, कर रही गुहार धरा ।।
अनगिनत वाहनों के भार से, उनसे निकलते ताप से।
पिघलता हिमनद बचाने को, कर रही गुहार धरा।

खोद रहे सब धरणी को,
कर रहे दोहन संपदा का।
प्रकृति की संतुलन बचाने को,
कर रही गुहार धरा ।।

अर्चना भारती नागेंद्र
परिवार सदस्य, अवधेश वर्मा
वैज्ञानिक सहायक, प.गु. वे. रत्नागिरी

वार्षिक कार्यक्रम वर्ष 23-24

बैंक में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु 2023-24 के लिए निर्धारित लक्ष्य :

क्र.सं	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल आदि सहित)	क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55%
		क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55%
		क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%
		क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण कार्य करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की-बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों आदि की खरीद पर	50%	50%	50%

	किया गया व्यय			
10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
12.	नागरिक चार्टर तथा जनसूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
13.	(1) राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(3) विदेश में स्थित केंद्रीय सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के कार्यालयों/ उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	क. हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02 बैठकें		
	ख. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	ग. राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
16.	बैंकों के ऐसे अनुभाग वहाँ सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में हो। (न्यूनतम)	40%	30%	20%

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

क.	हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
ख.	फाइलों पर टिप्पण	50%
ग.	वर्ष के दौरान आयोजित की जाने वाली नराकास की बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में 10 कार्यालयों की उपस्थिति की स्थिति में किया जाए)	प्रत्येक वर्ष एक बैठक
घ.	वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाय)	प्रत्येक तिमाही में एक बैठक
ङ.	कंप्यूटरों सहित, सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उकरणों की द्विभाषिक उपलब्धता	100%
च.	हिंदी टंकण कार्य करने वाले कर्मचारी /आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
छ.	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

जीवनावश्यक कटु सत्य

जीवनात हे एक परम सत्य आहे कि मानवाच्या तीन अवस्था आहेत

१. बालपण

२. तरुणपण

३. म्हातारपण

याचा क्रमसुद्धा ठरलेला आहे. १, २ आणि ३. याला कुणीही सामान्य अथवा असामान्य माणूस बदल/मागे पुढे – २–१–३ किंवा ३–२–१ असे करू शकत नाही. अगदी देव, परमेश्वर, भगवान, ईश्वर, खुदा, अल्ला, येशू, संत, महंत, साधू, अम्मा, बापू, गॉड, इत्यादी, ईत्यादि. कितीही भक्ती केली, कोणतेही मंत्र म्हटले, कितीही जप – तप केले, भारत देशातल्या सगळ्या मंदिरात, देवळात, गिरिजाघरात, गुरुद्वारात, चर्चमध्ये, मशिदीमध्ये, विहारमध्ये कितीही वेळा गेलात तरी या तीन (आणि तेही क्रमवार १–२–३) अवस्थेतून सुटका नाही किवा त्यामध्ये फ़ेरबदल सुद्धा करता येत नाही. फ़क्त एकच पद्धतीने सुटका होऊ शकते ती म्हणजे मृत्यू,जो कोणत्याही व्यक्तीला नको असतो.

२. जर हा शरीर रुपी देह चुस्त, मस्त, तंदुरुस्त व निरोगी ठेवायचा असेल तर नियमितपणे व्यायाम आवश्यक आहे. मग तो शारीरिक असो की मानसिक. जर कुणी व्यक्ती शारीरिक व्यायाम नियमितपणे करीत असेल तर त्याला दवाखान्यात जाण्याची गरज भासणार नाही. यदाकदाचित गरज भासलीच तर त्या व्याधितून त्याची लवकरच सुटका होईल. तसा मनुष्य जन्माला आल्या पासून नैसर्गिक पणे व्यायाम करीत असतो. लहान मुल सतत आपले हातपाय हलवून व्यायाम करीत असते. मुलं जसजसे मोठे होत जाते तसतसे ते अधिक तीव्रतेने व्यायाम करीत असते.

३. लहान मुलांना खेळायला खूप आवडते. ते खेळा द्वारे शारीरिक व्यायाम करीत असतात. पण हललीच्या यांत्रिक आणि जीवघेण्या स्पर्धेच्या युगाने सगळा खेळ खंडोबा केला आहे. आपण लहान मुलांना खेळायला जाण्यापासून परावृत्त करून अभ्यास करण्या साठी प्रवृत्त करीत असतो. तसेच हल्लीची मुल खेळामध्ये वेळ घालवण्यापेक्षा टी. व्ही. मोबाईलमध्ये वेळ घालविणे पसंत करतात. आपला अमूल्य वेळ वाया जातोय असे त्यांना वाटत नाही. मोबाईल पासून खूप मोठे ज्ञान संपादित होते असे त्यांना वाटते पण ते खरे नाही. आपण मोबाईलचा वापर कश्या पद्धतीने करतोय त्यावर अवलंबून आहे. जसे विज्ञान हे श्याप की वरदान, हे विज्ञानाचा उपयोग कश्या प्रकारे करतोय त्यावर अवलंबून आहे तसेच. बर असो. आपला मुख्य मुद्दा व्यायाम हा शरीरासाठी आवश्यक आहे की नाही तो आहे.

४. बंधूंनो आपण सकाळी उठून आकाशात बघितले तर लक्षात येईल की अनेक पक्षी हे आकाशामध्ये स्वच्छंद पणें विहार करीत असतात. काय ते सकाळी अन्न शोधण्यासाठी जातात ? की देवळात पूजा अर्चा करण्यासाठी जातात? अजिबात नाही. माझ्या मते ते सकाळी सकाळी उठून आकाशात विहार करीत व्यायाम करीत असतात आणि म्हणूनच त्यांना कुठल्या दवाखान्यात जावे लागत नाही की कोणत्याही देवाच्या देवळात पाय पडायला, पूजा अर्चा करायला जाण्याची गरज भासत नाही वीणा पूजा पाठ, कर्मकांड, मंत्रपठण ते आयुष्यभर ठणठणीत आणि तंदुरुस्त असतात. ते कधी अमिताभ बच्चन ने जाहिरात केलेला च्यवनप्राश खात नाहीत की कुण्या डेंटिस्ट ने जाहिरात केलेला कोलगेट ही वापरत नाहीत तसेच कोणत्याही हीरोइनने जाहिरात केलेल्या साबणाने आंघोळ सुद्धा करीत नाही तरीपण ते निरोगी आणि स्वच्छ दिसतात कारण ते नियमितपणे व्यायाम करून आवश्यक तेवढाच आहार घेत असतात. निसर्गाकडून आपल्याला बरेच काही शिकण्यासारखे आहे. काय आणि किती शिकावे हे ज्याचे त्याने ठरवावे.

५. ज्यांना निरोगी आणि व्याधिमुक्त राहावयाचे असेल त्यांनी नियमितपणे व्यायाम केलाच पाहिजे. सकाळी नियमितपणे एक तास व्यायाम करावा. यासाठी जिम मध्ये जाणे जरुरी नाही सकाळी उठून चालण्याचा किंवा धावण्याचा व्यायाम करू शकता. ते शक्य नसेल तर घरातल्या घरात ही व्यायाम करणे शक्य आहे. जसे की – जॉगिंग, सूर्य नमस्कार, दंड बैठक, दोरीवरील उड्या, अगदी बेड वर सुद्धा अनेक प्रकारचे व्यायाम करता येऊ शकतात, फक्त मनाची तयारी असावी.

६. याशिवाय मनाचा व्यायाम सुद्धा करता येऊ शकतो. ध्यान धारणेच्या माध्यमातून मनाचा व्यायाम करून जर संतुलित आहार घेतला तर शारीरिक व्यायामाची गरज नाही आपण निरोगी आणि स्वसथ राहू शकतो. परंतु मनावर तसेच पाच ही इंद्रियांवर नियंत्रण मिळविणे आवश्यक आहे. हे ज्यांना शक्य आहे त्यांनी अवश्य करावे. ज्यांना ध्यान धारणा शक्य नाही त्यांनी निदान नियमितपणे शारीरिक व्यायाम अवश्य करावा हेच मला येथे अधोरेखित करावयाचे आहे. खास करून किशोरवयीन व तरुणांनी तर नियमितपणे व्यायाम करणे अत्यावश्यक आहे.

वसंता शेंडे
सहायक आयुक्त,
केंद्रीय जीएसटी कार्यालय,
रत्नागिरी

मी

मी हस्यास सोबती नाही ,
मी अश्रूंना जमलो नव्हतो..!
मी माझ्यातल्या उत्साहाला ,
कधीच पुरेसा नव्हतो...!

मी आकांत मांडला माझा ,
मी हतबल इतका नव्हतो....!
मी पेरनितला बीज सुपीक ,
अस्तित्वात मी इतका बुटका नव्हतो....!

मी बहुमतात नेहमी ,
तरी कोणत्या सोबतीत नव्हतो...!
मी माझ्या नकक्ष्याच शिल्पकार ,
मोजमापात चुकलो नव्हतो....!

माझ्या नसण्यात असणे सारे ,
मी बोथट धारीचा नव्हतो...!
मी विशाल छातीचा राजा ,
मी पिंजलो इतका नव्हतो....!

मी असा संपलो नव्हतो....!

शब्द

किती शब्द माझे अधुरेच आहेत ,
किती सारे माझे बोलायचे आहे....!
तू ऐकत राहते अबोल पणे ,
किती सारे हे गोड आहे......!

डोळ्यात पाहून सारे ओठात आणतेस तू..
किती मानते तुला सागायचे आहे....!

अंतरात गुंतले म्हणून शब्दांनाही आराम झाला ,
किती सारे तुला मिठीत सांगायचे आहे....!

अबोल नाही तरी मुकेच सारे भासते ,
किती शांतता मला हसावयची आहे.....!

न बोलता समजते तुला मनातले ,
किती नव्याने मला विषय बोलायचे आहेत......!

प्रसाद गायकवाड
पुत्र रमेश गायकवाड
बँक ऑफ इंडिया

मुक्त भाव

शब्दांची धोरणे,
भावनांचे बोलणे!
मुक्या लेखकाला,
आसवांची निमंत्रणे!

रिकाम्या खुर्चीतले,
निकामी भोगणे!
सर्वगुण संपन्न,
तरी मागणे!

कोरडे पावसात,
फुलांचे टोचणे!
आक्रोश विद्रोह,
स्वतःला दाबणे!

निरक्षर प्रेम,
स्वाभाविक संपणे!
नियमांचे मोडणे,
अंकुरात संपणे!

अंतरंगाची साद

झाले निरभ्र, शुभ्र आकाश,
थांबला अनंत वेदनांचा प्रवास.
दरवळला पारिजातकाचा मंद सुवास
आत्म्याच्या गाभाऱ्यात पसरला प्रज्ञेचा प्रकाश

झाले पुन्हा सतेज लोचन,
शांत चित्त आणि सुहास्य वदन.
कर्मयज्ञाच्या ज्वालेत समिधांचे अर्पण.
चिरंतन सत्याच्या तेजात होई आत्मा पावन.

संपला उद्रेकाचा कल्लोळ; ओसरला भावनांचा पूर,
मनपटलांवर उमटले जाणिवांचे चित्र मधुर.
गवसला तो गंभीर पण सुरेख सूर.
जाहले निःशंक मन,हा प्रवास चालेल दूर.

आनंदयात्रेचा हा अगम्य प्रवास,
सोबत उदात्त दिव्यत्वाचा विश्वास,
पाउलवाटांवर करू सत्कर्मांची आरास,
तेव्हाच पूर्ण होईल हा चरित्रनिर्मितीचा ध्यास

प्रथमेश किनरे
बँक ऑफ़ इंडिया

मराठी सीखे...

मराठी	हिंदी	अंग्रेजी
व्यवहार	संव्यवहार	Transaction
पुरावा	साक्ष्य	Evidence
शक्य	संभव	Possible
योग्य	सही	Correct
शक्य	संभव	Possible
योग्य	सही	Correct
कार्यपद्धती	प्रक्रिया	Procedure
पत्रव्यवहार	पत्राचार	Correspondence
रक्कम देणे	भुगतान	Payment
वाहतूक भत्ता	वाहन भत्ता	Conveyance Allowance
अनिवासी	अनिवासी	Non Resident
गहाण	बंधक	Mortgage
मत	राय	Opinion
नियमबाह्य	अनियमित	Out of order
निर्मिती	निर्माण	Manufacture
निवेदन	ज्ञापन	Memorandum
कार्यक्षम	सक्षम	Competent
सभा	बैठक	Meeting
समिती	समिति	Committee
परिपक्वता तारीख	परिपक्वता तिथि	Maturity date
दिवाळखोरी	दिवाला	Bankruptcy
हप्ता	किस्त	Instalment
धारण क्षमता	क्षमता	Capacity
तपास	जांच	Investigation
सरासरी	औसत	Average
उत्पन्न	आय	Income
कर्जदार	ऋणी	Borrower
व्याज	ब्याज	Interest

मराठी	हिंदी	अंग्रेजी
अचूक	सही	Accurate
उत्कृष्ट	सर्वश्रेष्ठ	Excellent
अनावश्यक विलंब	असामान्य विलंब	Inordinate Delay
सूचना	अनुदेश	Instruction
नेमणूक	नियुक्ति	Appointment
दृष्टिबंधित	दृष्टिबंधक	Hypothecation
एकूण	समस्त	Aggregate
फसवणूक	धोखा	Fraud
आगाऊ पैसे देणे	अग्रिम	Advance
पंधरा दिवसांनी	पाक्षिक	Fortnightly
मर्जी	पक्ष	Favour
स्थगिति	स्थगन	Adjournment
अधिग्रहण	अर्जन	Acquisition
पत्ता	पता	Address
तुरंत	शीघ्र	Expedite
खर्च	व्यय	Expenditure
बरोबर	सही	Accurate
सर्वोच्च	सर्वश्रेष्ठ	Excellent
नकद वही	रोकड़ बही	Cash Book
ओळख	परिचय	Introduction
जुळवून घेणे	समायोजन	Adjustment
उधार घेणे	अग्रिम	Advance
स्वीकारा	स्वीकार करना	Accept
मूळ वेतन	मूल वेतन	Basic Pay
भत्ता	भत्ता	Allowance
नेमणूक	नियुक्ति	Appointment
जमानत	प्रतिभूति	Securities
कलम लावणे	कलम लगाना	Budding

मराठी	= हिंदी	= अंग्रेजी
नकदी पीक	नकदी फसल	Cash crop
मंजूर	अनुमोदन	Approve
मालमत्ता	आस्तियां	Assets
अभिप्राय	प्रतिसूचना	Feed back
अति विलंब	असामान्य विलंब	Inordinate delay
दुरूस्ती	संशोधन	Amendment
प्रत्यक्ष घटना	तथ्य	Facts
अमंलबजावणी	निष्पादन	Execution
बनावट	जालसाजी	Forgery
आवक (येणारे)	आवक	Inward
जावक (जाणारे)	जावक	Outward
आवारात / परिसरात	परिसर	Premises
प्रतिनियुक्ती	प्रतिनियुक्ति	Deputation
नियमितपणे	नियमित रूप से	Regularly
ताळेबंद	तुलन पत्र	Balance Sheet
हप्ता	किस्त	Installment
सध्याचे पीक(उभे)	खड़ी फसल	Standing Crop
खते	उर्वरक	Fertilizer
हमी देणे	परिवचन	Undertaking
कामकाज	कार्यवाही	Proceeding
कर्तव्यात कसूर	कर्तव्य उपेक्षा	Declaration of Duty
निवाडा/ निर्णय	अधिनिर्णय	Judgement

मराठी	= हिंदी	= अंग्रेजी
सरासरी	औसत	Average
भांडवल	पूंजी	Capital
शपथ पत्र	वचन पत्र	Promissory Note
समाधानकारक	संतोषजनक	Satisfactory
मोजणी	गणना	Computation
खात्री करून घेणे	स्थायी, पुष्टि	Confirm
सुधारणा	संशोधन	Amendment
उपस्थित	उपस्थिति	Attendance
नवीन स्थिति	नवीनतम स्थिति	Latest Position
संदर्भ	संदर्भ	Reference
माहिती करिता	सूचनार्थ	For Information
लगेच	तत्काल	Urgent
सत्यापन करणे	सत्यापित	Verified
पुढे पाठवणे	अग्रेषण	Forward
स्पष्टीकरण	स्पष्टीकरण	Clarification
प्रस्तावित	प्रस्तावित	Proposed
पालन करणे	अनुपालन	Compliance
मंजूर	अनुमोदन	Approve
प्रमाणित	अनुप्रमाणित	Attested
कृती / कार्य करणे	कार्रवाई	Action
कागदपत्र	दस्तावेज	Document
लेखी करारनामा	विलेख	Deed

नराकास राजभाषा शील्ड योजना वर्ष 2022-23

पुरस्कार	सरकारी कार्यालय	बैंक तथा बीमा
प्रथम	कोंकण रेलवे	न्यू इंडिया एश्योरेन्स कं
द्वितीय	पवन गुब्बारा	भारतीय स्टेट बैंक
तृतीय	तटरक्षक अवस्थान	सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
प्रोत्साहन	दीपस्तंभ एवं डीजीपीएस, रत्नागिरी	नेशनल इन्शुरन्स कं

पुरस्कार विजेताओं का हार्दिक अभिनंदन।।।

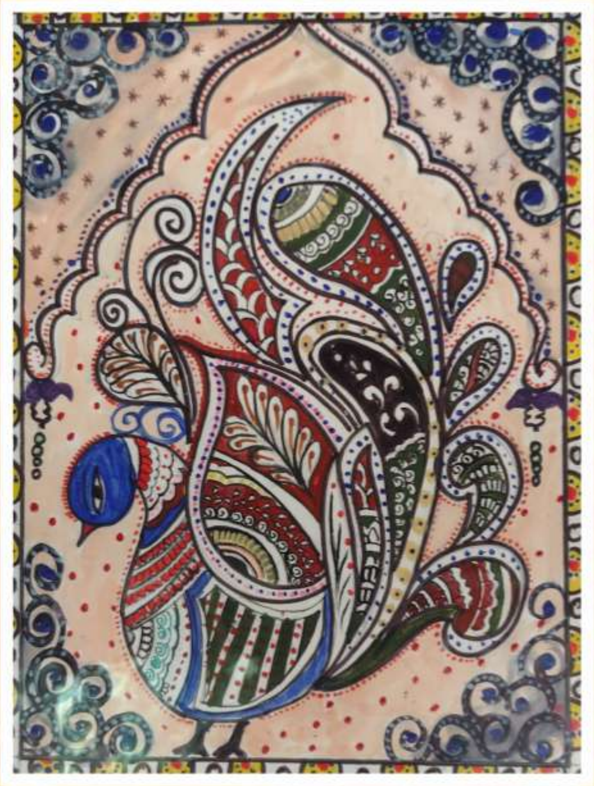

प्रकृति सहाय,
पुत्री श्री ललित प्रकाश,
दीपस्तंभ एवं डी जी पी एस स्टेशन,
रत्नागिरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

वार्षिक कार्य-योजना

वर्ष 2023-24

भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन में सभी लक्ष्यों को पाना

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन

हिन्दी में प्राप्त पत्र/ईमेल का जवाब अनिवार्य रूप से हिन्दी में देना

अंग्रेजी में प्राप्त पत्र/ईमेल का जवाब हिन्दी में देना

कार्यालय प्रमुखों के आपसी संवाद हेतु हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

यूनिकोड, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांस्लेट टूल के माध्यम से हिंदी पत्राचार को बढावा देना

छमाही पत्रिका "राजभाषा रत्नसिंधु" का नियमित प्रकाशन

ई-पत्रिका "प्रेरणा" का छमाही प्रकाशन

हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी दिवस और विश्व हिन्दी दिवस का सभी सदस्य कार्यालयों में आयोजन

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का प्रत्येक तिमाही में आयोजन

छमाही रिपोर्टों का ऑनलाइन प्रस्तुति की सुविधा उपलब्ध कराना

कोर कमिटी द्वारा सहायता हेतु सदस्य कार्यालयों का दौरा करना

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन तथा हिंदी ज्ञान का रोस्टर अपडेट करना

विश्व हिंदी दिवस के सुअवसर पर समिति द्वारा गतिमंद बच्चों के स्कूल अविष्कार में चित्र रंग भरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

जल नहीं तो कल नहीं

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, शिवाजीनगर, रत्नागिरी 415 639 (महाराष्ट्र)